बुधवार
12 अगस्त 2026
● देहरादून
● वर्ष 34
● अंक 200
● पृष्ठ 8
● मूल्य ₹ 1.00

34 साल से देहरादून का विश्वास

दूनवैलीमेल

सांध्य दैनिक

आर.एन.आई. : 59626/94 email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

खाई में गिरी कार: एक की मौत, तीन घायल

हमारे संवाददाता

चंपावत। सड़क हादसे में देर शाम एक कार के खाई में गिर जाने से जहां एक व्यक्ति की मौत हो गयी वही तीन लोग घायल हुए है। सूचना मिलने पर पुलिस व एसडीआरएफ की टीमों ने मौके पर पहुंच कर मृतक व घायलों का बाहर निकालकर अस्पताल पहुंचाया जहां घायलों की हालत चिंताजनक बनी हुई है।

मामला चम्पावत जिले का है। यहां खटीमा से पिथौरागढ़ जा रही कार बनलेख क्षेत्र में अनियंत्रित होकर करीब 150 मीटर गहरी खाई में जा गिरी। हादसे के वक्त कार में चार लोग सवार थे। दुर्घटना में एक व्यक्ति की मौत हो गई, जबकि तीन लोग घायल हुए। हादसे की सूचना मिलते ही चंपावत कोतवाली पुलिस और एसडीआरएफ की टीम तत्काल मौके पर पहुंची। स्थानीय लोगों की मदद से पुलिस और एसडीआरएफ ने खड़ी पहाड़ी से नीचे उतरकर रेस्क्यू अभियान शुरू किया। कड़ी मशक्कत के बाद कार में फंसे सभी लोगों को खाई से बाहर निकाला गया और 108 एंबुलेंस की मदद से जिला अस्पताल चंपावत पहुंचाया गया। जहां चिकित्सकों ने जांच के बाद एक व्यक्ति को मृत घोषित कर दिया। वहीं

दो घायलों का जिला अस्पताल में उपचार चल रहा है। एक अन्य घायल की स्थिति गंभीर होने के कारण उसे सुशीला तिवारी अस्पताल, हल्द्वानी रेफर किया गया है। पुलिस और एसडीआरएफ की त्वरित कार्रवाई के चलते घायलों को समय रहते खाई से बाहर निकालकर अस्पताल पहुंचाया जा सका। रेस्क्यू अभियान में स्थानीय लोगों ने भी पुलिस टीम का सहयोग किया।

हादसे को गंभीरता से लेते हुए चंपावत के जिलाधिकारी मनीष कुमार ने दुर्घटना की मजिस्ट्रियल जांच के आदेश दिए हैं।

दुर्घटना के कारणों और परिस्थितियों की विस्तृत जांच के लिए एसडीएम चंपावत को जांच अधिकारी नियुक्त किया गया है। जांच अधिकारी को हादसे के कारणों, परिस्थितियों और घटना से जुड़े अन्य तथ्यों की गहनता से जांच कर 15 दिनों के भीतर जांच रिपोर्ट जिलाधिकारी कार्यालय में प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए हैं। जिलाधिकारी ने कहा कि सड़क दुर्घटना के कारणों की तथ्यपरक जांच कर आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी, ताकि भविष्य में इस तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोका जा सके।

रफ्तार का कहर, एक की मौत एक घायल

हमारे संवाददाता

देहरादून। तेज रफ्तार का कहर एक बार फिर जिंदगी पर भारी पड़ गया। रामपुर रोड स्थित ट्रांसपोर्ट नगर चौकी क्षेत्र के बेलबाबा के पास बीती देर शाम हुए भीषण सड़क हादसे में 22 वर्षीय युवक की दर्दनाक मौत हो गई, जबकि उसका साथी गंभीर रूप से घायल हुआ है। सूचना मिलने पर पुलिस व स्थानीय लोगों ने मृतक व घायलों को अस्पताल पहुंचाया जहा घायल की हालत चिंतांजनक बनी हुई है।

जानकारी के मुताबिक, उत्तर उजाला निवासी 22 वर्षीय अरसलान अपने साथी के साथ एसी मैकेनिक का काम करता था। बीते रोज दोनों काम के सिलसिले में रुद्रपुर गए थे। देर शाम स्कूटी से हल्द्वानी लौटते समय बेलबाबा के पास सामने से आ रही तेज रफ्तार यूपी नंबर की अर्टिगा कार ने उनकी स्कूटी को जोरदार टक्कर मार दी। हादसा इतना जबरदस्त था कि दोनों युवक स्कूटी से उछलकर सड़क पर दूर जा गिरे। दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए, जबकि टक्कर से अर्टिगा कार का अगला हिस्सा भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों घायलों को तत्काल अस्पताल पहुंचाया। पुलिस ने हादसे में शामिल यूपी नंबर की अर्टिगा कार को कब्जे में लेकर चालक को हिरासत में ले लिया है। पुलिस चालक से पूछताछ कर रही है और हादसे की वजहों की जांच की जा रही है।

ब्लाइंड मर्डर का खुलासा, दो सगे भाई सहित चार गिरफ्तार

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। कारोबार व पारिवारिक रंजिश को लेकर की गई हत्या का खुलासा करते हुए पुलिस ने चार हत्यारोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। चारो हत्यारोपियों में से दो सगे भाई है जिनकी निशानदेही पर गंगा नदी से शव व मृतक की बाइक भी बरामद की गयी है।

जानकारी के अनुसार बीती 2-3 अगस्त की रात शिवपुरी रायसी निवासी अंकित चौहान जो कि अपनी मोटरसाइकिल से अपने घर जा रहा था रास्ते में जाते हुए गायब हो गया और उसका मोबाइल बंद हो गया जिस पर उसके परिजनों द्वारा कोतवाली लक्सर पर गुमशुदगी दर्ज करायी गयी। घटना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी गयी। पुलिस द्वारा घटना के विभिन्न पहलुओं

हत्या कर गंगा में डुबोया, बाइक सहित शव बरामद

पर बारीकी से जांच की गई साथ ही आसपास के इलाकों के सीसीटीवी कैमरे को खंगालें गयें। जांच के दौरान यह भी प्रकाश में आया कि गुमशुदा अंकित के गांव के रहने वाले सचिन मेहकार कुलवंत व अंकित उर्फ फौजी सहित चार लोगों से उसकी पिछले कुछ समय से रंजिश चली आ रही थी इस सूचना पर कोतवाली लक्सर पर मुकदमा दर्ज किया गया। जिस पर पुलिस टीम द्वारा चारों लोगों से बारीकी से पूछताछ की गई। पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि गुमशुदा अंकित चौहान की उन चारों व्यक्ति ने मिलकर 2 तारीख की रात को हत्या कर दी है व शव को शिवपुरी गांव के पास बनी खुसरो की ठोकर से उसकी मोटरसाइकिल के साथ बांधकर नदी में डुबो दिया है पूछताछ में उन्होंने बताया कि मृतक अंकित काफी समय से उन्हें परेशान कर रहा था और ट्रैक्टर ट्राली के खनन में उनकी मुखबिरी करके उन्हें पकड़वा दिया करता था जिससे उन्हें काफी पैसे की हानि हो रही थी इसलिए उन चारों ने अंकित को रास्ते से हटाने का फैसला किया तथा 2 तारीख की रात को जब अंकित अपने घर लौट रहा था तो उसकी मोटरसाइकिल रोक कर रास्ते में ही उसकी हत्या कर दी। आरोपितों की स्वीकारोकती पर पुलिस द्वारा उनको आगे आगे चलाकर उनके बताए स्थान पर ले गए जहां पर तलाशी हेतु एसडीआरएफ की टीम को भी गोताखोरों सहित बुलाया गया एसडीआरएफ के गोताखोरों की मदद से अथक प्रयासों से गंगा नदी में डूबे मोटरसाइकिल व शव को बरामद किया गया। आरोपियों में से मुख्य आरोपित अंकित चौहान उर्फ फौजी पूर्व में थाना खानपुर से हत्या के मामले में जेल जा चुका है। गिरफ्तार आरोपियों के नाम सचिन पुत्र पवन निवासी शिवपुरी रायसी हरिद्वार, मेहकार पुत्र पवन निवासी शिवपुरी रायसी हरिद्वार, कुलवंत पुत्र कल्लू निवासी शिवपुरी रायसी हरिद्वार व अंकित चौहान उर्फ फौजी पुत्र सुरेश पाल निवासी शिवपुरी रायसी हरिद्वार बताये जा रहे है।

दून वैली मेल

संपादकीय

आमने-सामने सत्ता और विपक्ष

संसद देश की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक संस्था है। यहां सवाल पूछे जाने चाहिए, जवाब दिए जाने चाहिए, बहस होनी चाहिए और उन सवालों का समाधान तलाशा जाना चाहिए जो देश के करोड़ों नागरिकों को प्रभावित करते हैं। लेकिन जब संसद परिसर ही सत्ता और विपक्ष के प्रदर्शन का अखाड़ा बन जाए तो सवाल केवल राजनीतिक टकराव का नहीं रहता, सवाल लोकतंत्र की प्राथमिकताओं का हो जाता है। छात्रों के मुद्दे पर लोकसभा में सत्ता पक्ष और विपक्ष का आमने-सामने प्रदर्शन इसी बेचैनी की तस्वीर है। दोनों तरफ नारे हैं, आरोप हैं, पोस्टर हैं और अपनी-अपनी राजनीतिक व्याख्याएं हैं। सत्ता पक्ष कहता है कि विपक्ष छात्रों के मुद्दे पर राजनीति कर रहा है। विपक्ष कहता है कि सरकार छात्रों की आवाज दबा रही है। लेकिन इस शोर के बीच एक आवाज लगातार गायब हैकृछात्र की आवाज। जिस छात्र के नाम पर संसद में प्रदर्शन हो रहा है, उससे कोई पूछ रहा है कि वह चाहता क्या है? उसे न तो संसद के बाहर नेताओं की नारेबाजी चाहिए और न संसद के भीतर राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप। उसे चाहिए एक ऐसी परीक्षा व्यवस्था, जिस पर उसे भरोसा हो। उसे चाहिए कि उसकी मेहनत किसी लापरवाही, अनियमितता या व्यवस्था की कमजोरी के कारण बर्बाद न हो। उसे चाहिए कि यदि उसके साथ अन्याय हुआ है तो उसकी शिकायत सुनी जाए और जिम्मेदार लोगों पर कार्रवाई हो। इतनी सी बात है। लेकिन राजनीति ने इस सीधी बात को भी इतना जटिल बना दिया है कि छात्र का मूल सवाल पीछे छूट गया है। भारत में प्रतियोगी परीक्षा केवल एक परीक्षा नहीं होती। उसके पीछे वर्षों की तैयारी होती है। गांव से शहर आने वाला छात्र, छोटे कमरे में रहकर पढ़ने वाला छात्र, खेत में काम करने के बाद किताब खोलने वाला छात्र, परिवार की आर्थिक मुश्किलों के बीच फीस जुटाने वाला छात्रकृहर किसी की अपनी कहानी है। वह केवल प्रश्नपत्र हल नहीं करता, वह अपने परिवार की उम्मीदें हल करता है और जब परीक्षा व्यवस्था पर सवाल उठता है तो चोट केवल एक परीक्षा पर नहीं होती। चोट उस भरोसे पर होती है जिसके सहारे युवा अपना भविष्य बना रहा होता है। यही कारण है कि छात्रों के सवाल को राजनीतिक नारे में बदल देना खतरनाक है। सरकार के लिए यह केवल विपक्ष का आंदोलन नहीं होना चाहिए। विपक्ष के लिए यह केवल सरकार को घेरने का अवसर नहीं होना चाहिए। दोनों को यह समझना होगा कि युवा किसी राजनीतिक दल की संपत्ति नहीं है। वह देश की संपत्ति है। सरकार को यदि लगता है कि परीक्षा व्यवस्था पूरी तरह पारदर्शी है तो उसे तथ्यों के साथ सामने आना चाहिए। अगर कहीं गड़बड़ी हुई है तो उसे स्वीकार करने में संकोच क्यों? गलती स्वीकार करना कमजोरी नहीं है। गलती छिपाना कमजोरी है। सरकार के पास संस्थाएं हैं, संसाधन हैं और निर्णय लेने की शक्ति है। इसलिए उससे सवाल भी ज्यादा होंगे। यह लोकतंत्र का सामान्य नियम है। यदि छात्र किसी परीक्षा को लेकर सवाल उठा रहे हैं तो सरकार को उनके सवालों का जवाब देना चाहिए। जांच की जरूरत है तो जांच हो। जिम्मेदारी तय करने की जरूरत है तो जिम्मेदारी तय हो। परीक्षा प्रणाली में तकनीकी या प्रशासनिक कमी है तो सुधार हो। लेकिन यह भी जरूरी है कि जांच और सुधार केवल घोषणा बनकर न रह जाएं। युवा अब घोषणाओं से आगे की चीज मांगता हैकृविश्वास। लेकिन विपक्ष भी अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकता। हर छात्र आंदोलन को राजनीतिक आंदोलन बना देना आसान है। हर परीक्षा विवाद में सरकार के खिलाफ नारा लगाना भी आसान है। मुश्किल काम है समस्या का समाधान सामने रखना। अगर विपक्ष छात्रों के साथ है तो संसद में केवल हंगामा क्यों? विस्तृत बहस क्यों नहीं? परीक्षा सुधार की ठोस योजना क्यों नहीं? जिम्मेदार संस्थाओं की जवाबदेही तय करने का दबाव क्यों नहीं? सड़क पर प्रदर्शन लोकतंत्र का हिस्सा है, लेकिन संसद में विपक्ष की असली ताकत उसके सवाल और तर्क हैं। संसद में आवाज ऊंची करने से ज्यादा जरूरी है सवाल को मजबूत करना। विपक्ष को यह समझना होगा कि छात्र उसके राजनीतिक पोस्टर का चेहरा नहीं बनना चाहता। वह चाहता है कि उसका भविष्य सुरक्षित हो। आज सबसे बड़ा सवाल संसद से है। क्या संसद छात्रों के मुद्दे पर गंभीर बहस करेगी? क्या सरकार और विपक्ष एक-दूसरे पर आरोप लगाने से आगे बढ़ेंगे? क्या परीक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए कोई सर्वदलीय सहमति बनेगी? क्या यह तय होगा कि किसी परीक्षा में गड़बड़ी की शिकायत होने पर जांच और कार्रवाई की समयसीमा क्या होगी? क्या विद्यार्थियों को समय पर जानकारी देने की जवाबदेही तय होगी? क्या परीक्षा कराने वाली संस्थाओं की जवाबदेही भी उतनी ही कठोर होगी जितनी किसी छात्र की होती है? क्योंकि छात्र से कहा जाता है कि समय पर आवेदन करो। समय पर फीस भरो। समय पर परीक्षा केंद्र पहुंचो। एक गलती हुई तो परिणाम भुगतो। तो फिर व्यवस्था से यह सवाल क्यों नहीं पूछा जाना चाहिए कि अगर उसकी गलती से लाखों छात्रों का समय और पैसा बर्बाद हो जाए तो जिम्मेदार कौन होगा? नियम केवल छात्रों के लिए क्यों? जवाबदेही व्यवस्था की भी होनी चाहिए। भारत की राजनीति में युवा हमेशा सबसे आकर्षक शब्द रहा है। हर चुनाव में युवा शक्ति की बात होती है। रोजगार के वादे होते हैं। स्टार्टअप की बातें होती हैं। नई शिक्षा व्यवस्था की बातें होती हैं। डिजिटल भारत और विकसित भारत की बातें होती हैं। लोकसभा के बाहर सत्ता पक्ष और विपक्ष का आमने-सामने प्रदर्शन देखकर शायद दोनों अपने-अपने समर्थकों को यह साबित कर रहे हों कि वह छात्रों के साथ हैं। लेकिन छात्र को यह साबित करने की जरूरत नहीं कि कौन उसके साथ खड़ा है। उसे परिणाम चाहिए। अगर सरकार सच में छात्रों के साथ है तो वह उनके सवालों के जवाब दे। अगर विपक्ष सच में छात्रों के साथ है तो वह उनके सवालों को राजनीतिक शोर से निकालकर नीतिगत बहस में ले जाए। दोनों मिलकर परीक्षा व्यवस्था की ऐसी जवाबदेही तय करें कि आने वाली पीढ़ी को बार-बार सड़क पर उतरना न पड़े। यही राजनीति की परीक्षा है।

राहुल गांधी पर भाजपा का 'हमला'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। छात्रों और प्रतियोगी परीक्षाओं से जुड़े मुद्दों को लेकर संसद में सियासी टकराव तेज हो गया है। लोकसभा में छात्रों के मुद्दे पर चर्चा और विरोध-प्रदर्शन के बीच भाजपा ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए उन पर चर्चा से बचने का आरोप लगाया। भाजपा नेताओं ने सवाल उठाया कि जब विपक्ष छात्रों के मुद्दे को इतना महत्वपूर्ण बता रहा है तो फिर संसद की चर्चा में सरकार के जवाब का सामना करने से उसे परहेज क्यों है? भाजपा ने राहुल गांधी और विपक्ष के रुख को लेकर दोहरे रवैये का आरोप लगाते हुए कहा कि छात्रों के भविष्य से जुड़े विषय को राजनीतिक प्रदर्शन का मुद्दा बनाने के बजाय संसद में गंभीर चर्चा का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। सत्ता पक्ष की ओर से यह भी सवाल उठाया गया कि विपक्ष एक तरफ छात्रों की समस्याओं को लेकर सरकार से जवाब मांगता है और दूसरी तरफ जब सरकार अपना पक्ष रखने के लिए तैयार होती है तो चर्चा से बचने की कोशिश करता है।

छात्रों से जुड़े मुद्दे पर संसद परिसर में सत्ता पक्ष और विपक्ष के सांसदों के प्रदर्शन ने राजनीतिक तापमान बढ़ा दिया है। दोनों पक्ष अपने-अपने तरीके से यह संदेश देने में जुटे हैं कि वह छात्रों की समस्याओं को लेकर गंभीर हैं। भाजपा का कहना है कि संसद में चर्चा का रास्ता खुला है और विपक्ष को लोकतांत्रिक तरीके से अपनी बात रखनी चाहिए। पार्टी नेताओं ने आरोप लगाया कि केवल प्रदर्शन और नारेबाजी से छात्रों की समस्याओं का समाधान नहीं होगा। वहीं विपक्ष छात्रों से जुड़े मुद्दों पर सरकार की जवाबदेही तय करने की मांग कर रहा है। इस पूरे घटनाक्रम में सबसे महत्वपूर्ण सवाल यही है कि छात्रों के मुद्दे पर संसद में सार्थक चर्चा कब होगी और उसका ठोस परिणाम क्या निकलेगा।

भाजपा ने अपने हमले का केंद्र राहुल गांधी को बनाया। पार्टी की ओर से कहा गया कि यदि विपक्ष वास्तव में छात्रों की

❑छात्रों के मुद्दे पर भाजपा ने नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को घेरा
❑भाजपा ने लगाया लोकसभा में चर्चा से भागने का आरोप
❑छात्रों के सवाल पर दोहरे रवैये को लेकर विपक्ष निशाना

समस्याओं को लेकर गंभीर है तो उसे सदन में चर्चा में हिस्सा लेना चाहिए। सत्ता पक्ष ने राहुल गांधी के रुख पर सवाल उठाते हुए कहा कि संसद में चर्चा से बचना और बाहर छात्रों के मुद्दे पर राजनीति करना दोहरा रवैया है। भाजपा का तर्क है कि संसद सरकार से सवाल पूछने का सबसे प्रभावी मंच है। यहां विपक्ष को सवाल उठाने के साथ-साथ सरकार का जवाब भी सुनना चाहिए और जरूरत पड़ने पर उसके जवाब पर आगे सवाल करना चाहिए। पार्टी नेताओं ने कहा कि लोकतंत्र केवल विरोध करने का नाम नहीं है। लोकतंत्र में सरकार को जवाब देना और विपक्ष को जवाब सुनना दोनों जरूरी हैं।

छात्रों के मुद्दे पर छिड़ी इस राजनीतिक लड़ाई ने एक बड़ा सवाल भी खड़ा किया है क्या छात्रों की समस्याएं वास्तव में राजनीतिक दलों की प्राथमिकता हैं या फिर वे केवल एक-दूसरे को घेरने का माध्यम बन रही हैं? प्रतियोगी परीक्षाओं में पारदर्शिता, समय पर परीक्षा, परिणाम और भर्ती प्रक्रिया को लेकर युवाओं के बीच लंबे समय से चिंता रही है। ऐसे में संसद में इस विषय पर गंभीर चर्चा की जरूरत है। छात्रों को राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप से ज्यादा यह जानने में दिलचस्पी होगी कि परीक्षा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी कैसे बनाया जाएगा, शिकायतों का समाधान कैसे होगा और अनियमितता सामने आने पर जिम्मेदारी किसकी तय होगी।

भाजपा ने विपक्ष के सामने सीधा सवाल रखा है कि यदि छात्रों के मुद्दे पर उसके पास गंभीर प्रश्न और ठोस तथ्य हैं तो उन्हें संसद के भीतर क्यों नहीं रखा जाता? सत्ता पक्ष का कहना है कि सदन में बहस के दौरान सरकार अपना पक्ष रख सकती है और विपक्ष उसके जवाब पर सवाल कर सकता है। इससे जनता के सामने पूरा पक्ष स्पष्ट होगा। भाजपा ने इसी आधार पर राहुल गांधी और विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि छात्रों के मुद्दे को लेकर केवल संसद के बाहर प्रदर्शन करना पर्याप्त नहीं है। हालांकि विपक्ष की ओर से सरकार पर छात्रों की समस्याओं को गंभीरता से नहीं लेने के आरोप लगाए जाते रहे हैं। ऐसे में राजनीतिक टकराव के बीच यह मुद्दा अब

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

अब कांग्रेस करेगी 'इंटरनल सर्वे'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड में आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस ने अब अपनी तैयारियों को जमीन पर उतारना शुरू कर दिया है। संगठन को मजबूत करने और चुनावी रणनीति को धार देने के बाद पार्टी अब प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में संभावित प्रत्याशियों की वास्तविक स्थिति का आकलन करने की तैयारी में है। इसके तहत सभी विधानसभा क्षेत्रों में मौजूदा विधायकों के साथ ही चुनाव लड़ने की दावेदारी कर रहे नेताओं का इंटरनल सर्वे कराया जाएगा। पार्टी का उद्देश्य केवल संभावित प्रत्याशियों की लोकप्रियता नापना नहीं, बल्कि यह पता लगाना भी है कि कौन सा नेता अपने विधानसभा क्षेत्र में संगठन, कार्यकर्ताओं और आम मतदाताओं के बीच कितनी पकड़ रखता है। सर्वे के जरिए दावेदारों की स्वीकार्यता, सक्रियता, क्षेत्र में मौजूदगी और चुनावी क्षमता जैसे पहलुओं को परखा जाएगा।

कांग्रेस के भीतर टिकट को लेकर दावेदारी करने वाले नेताओं की संख्या लगातार बढ़ रही है। ऐसे में पार्टी नेतृत्व के सामने सबसे बड़ी चुनौती योग्य और जीतने की क्षमता रखने वाले उम्मीदवार का चयन करना है। इंटरनल सर्वे को इसी दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। पार्टी सूत्रों के मुताबिक सर्वे में संभावित प्रत्याशियों की व्यक्तिगत छवि के साथ ही क्षेत्र में उनकी सक्रियता, स्थानीय मुद्दों पर पकड़ और जनता के बीच स्वीकार्यता को भी आकलन के दायरे में रखा जाएगा। इसके अलावा यह भी देखा जाएगा कि संबंधित नेता संगठन के लिए कितना सक्रिय रहा है और चुनाव के दौरान कार्यकर्ताओं को एकजुट रखने की उसकी क्षमता कैसी है।

इंटरनल सर्वे केवल नए दावेदारों तक सीमित नहीं रहेगा। मौजूदा कांग्रेस विधायकों को भी इस प्रक्रिया से गुजरना होगा। पार्टी यह जानने की कोशिश करेगी कि वर्तमान विधायक के प्रति क्षेत्र की जनता का रुझान

◆विधायकों का रिपोर्ट कार्ड भी होगा तैयार
◆टिकट के दावेदारों की परखी जाएगी पकड़
◆कांग्रेस ने चुनावी तैयारी को दी नई रफ्तार

कैसा है। स्थानीय स्तर पर उनकी सक्रियता, उपलब्धता और कामकाज को लेकर मतदाताओं की राय क्या है और आगामी चुनाव में उनकी जीत की संभावनाएं कितनी मजबूत हैं। इससे पार्टी नेतृत्व को उन सीटों पर भी समय रहते रणनीति बनाने में मदद मिल सकती है, जहां मौजूदा विधायक को लेकर संगठन या जनता के स्तर पर असंतोष की स्थिति हो।

उत्तराखंड की सभी विधानसभा सीटों का राजनीतिक और सामाजिक समीकरण एक जैसा नहीं है। पर्वतीय क्षेत्रों में पलायन, सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार जैसे मुद्दे महत्वपूर्ण हैं, तो मैदानी क्षेत्रों में शहरीकरण, बेरोजगारी, महंगाई, कानून-व्यवस्था और बुनियादी सुविधाओं से जुड़े सवाल चुनावी मुद्दे बनते हैं। ऐसे में कांग्रेस का सर्वे केवल नेताओं की लोकप्रियता तक सीमित रहने के बजाय प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र के स्थानीय राजनीतिक समीकरण को समझने का माध्यम भी बन सकता है। पार्टी यह जानना चाहेगी कि किस सीट पर कौन सा चेहरा विपक्ष के सामने मजबूत चुनौती पेश कर सकता है और किन सीटों पर संगठन को अभी से अतिरिक्त मेहनत की जरूरत है।

सर्वे की तैयारी से कांग्रेस के भीतर टिकट की दावेदारी को लेकर भी हलचल तेज होने की संभावना है। अब तक क्षेत्र में सक्रियता दिखाकर टिकट की दावेदारी कर रहे नेताओं के सामने अपनी राजनीतिक जमीन साबित करने की चुनौती होगी। सर्वे में यदि किसी नेता की लोकप्रियता और स्वीकार्यता मजबूत सामने आती है तो उसकी दावेदारी को स्वाभाविक रूप से बल मिल सकता है। वहीं केवल संगठन के भीतर मजबूत संपर्क के आधार पर टिकट की उम्मीद लगाए बैठे नेताओं के लिए यह प्रक्रिया चुनौतीपूर्ण साबित हो सकती है। पार्टी के इस कदम से यह संदेश भी जा रहा है कि टिकट वितरण केवल सिफारिश या व्यक्तिगत प्रभाव के आधार पर नहीं, बल्कि चुनावी क्षमता और जनता के बीच स्वीकार्यता को ध्यान में रखकर करने की कोशिश होगी।

सत्ता में भाजपा की मौजूदगी के बीच कांग्रेस के सामने सबसे बड़ी चुनौती सरकार के खिलाफ संभावित असंतोष को अपने

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

तीन दिन से सेंधी गांव में हाथी की धमक से ग्रामीणों में दहशत

कोटद्वार (आरएनएस)। जयहरीखाल ब्लॉक के अंतर्गत सेंधीखाल के सेंधी गांव में पिछले तीन दिनों से हाथी की लगातार धमक बनी हुई है। हाथी आबादी क्षेत्र में पहुंचकर केले के बगीचे, चारा पत्ती के पेड़ों और अन्य फसलों को नुकसान पहुंचा रहा है। हाथी की लगातार मौजूदगी से ग्रामीणों में दहशत का माहौल है और जानमाल के नुकसान का खतरा बना हुआ है।सेंधी गांव निवासी उम्मेद सिंह रावत ने बताया कि एक हाथी पिछले तीन दिनों से गांव के आसपास मंडरा रहा है। रविवार रात करीब ढाई बजे हाथी गांव में पहुंच गया और उनके केले के बगीचे को तहस-नहस कर दिया। हाथी ने चारा पत्ती के कई पेड़ भी तोड़ डाले। इसके बाद वह परमानंद जदली के घर के समीप पहुंच गया, जिससे परिवार के लोग दहशत में आ गए।ग्रामीणों ने पटाखे फोड़कर और कनस्तर बजाकर हाथी को आबादी क्षेत्र से दूर खदेड़ने का प्रयास किया। काफी मशक्कत के बाद हाथी जंगल की ओर गया। उम्मेद सिंह के अनुसार, इससे पहले शनिवार सुबह भी हाथी ने गांव के पास बांस के पेड़ों को तोड़ दिया था। मंदिर के समीप भी कई पेड़ों को नुकसान पहुंचाया। उन्होंने वन विभाग से क्षेत्र में वन कर्मियों की गश्त बढ़ाने और हाथी को आबादी क्षेत्र से दूर रखने के लिए प्रभावी कदम उठाने की मांग की है।उधर, लैंसडौन के रेंजर राकेश चंद्र शाह ने बताया कि ग्रामीणों की ओर से गांव में हाथी के धमकने की सूचना मिली है। वन रक्षक आशीष रावत के नेतृत्व में वनकर्मियों की टीम मौके पर मौजूद है। हाथी को आबादी क्षेत्र से दूर जंगल में भेजने के प्रयास किए जा रहे हैं। ग्रामीण भी इसमें सहयोग कर रहे हैं।

विधायक ने लगाया जिला योजना में प्रस्तावों की अनदेखी का आरोप

उत्तरकाशी(आरएनएस)। यमुनोत्री विधायक संजय डोभाल ने जिला योजना में जनप्रतिनिधियों के प्रस्तावों की अनदेखी का आरोप लगाते हुए निष्पक्ष समीक्षा की मांग की है। उन्होंने कहा कि करीब 75 करोड़ रुपये की जिला योजना में उनके कई प्रस्तावों को दरकिनार कर दूसरे विधानसभा क्षेत्र से जुड़े प्रतिनिधियों के प्रस्ताव शामिल किए गए हैं। विधायक ने कहा कि अगर प्रभारी मंत्री जिला योजना में संसोधन नहीं करते तो वह एक सप्ताह बद जिलाधिकारी कार्यालय और मंत्री आवास का घेराव करेंगे।लोनिवि विश्राम गृह में पत्रकारों से बातचीत में यमुनोत्री विधायक संजय डोभाल ने जिला योजना के प्रस्तावों की अनदेखी पर सवाल खड़े किए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक स्वीकृत योजना के प्रस्तावक और संस्तुति का विवरण सार्वजनिक किया जाए। सूची निरस्त या संशोधित नहीं होने पर जिला मुख्यालय और प्रभारी मंत्री के आवास के घेराव की चेतावनी दी।उन्होंने आरोप लगाया कि मौजूदा जिला योजना के नाम पर पैसे इकट्ठे हुए और यह साबित भी हुआ है। उन्होंने कहा कि जिला योजना में अधिकांश निजी प्रस्ताव शामिल हैं, जो दर्शाता है कि जिला योजना में पारदर्शिता नहीं बल्कि व्यक्तिगत पसंद से योजनाएं शामिल की गई हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि लोनिवि, वन विभाग, माध्यमिक शिक्षा, हाइड्रम जैसे विभागों में उनके प्रस्ताव के लिए कोई राशि प्राप्त नहीं हुई है। उन्होंने इसे खुलेआम भ्रष्टाचार करार दिया और इसकी जांच की मांग उठाई।

उत्तराखंड में धार्मिक स्थलों की मर्यादा के संरक्षण के लिए कानून की मांग

अल्मोड़ा(आरएनएस)। उत्तराखंड के धार्मिक स्थलों की पवित्रता और धार्मिक भावनाओं के संरक्षण को लेकर अधिवक्ता विनोद चंद्र तिवारी ने प्रेस वार्ता कर राज्य सरकार से कानून बनाने की मांग उठाई। इस दौरान उन्होंने %उत्तराखंड धार्मिक स्थल मर्यादा संरक्षण अधिनियम, 2026% का प्रस्तावित मसौदा भी सार्वजनिक किया। प्रस्तावित अधिनियम का उद्देश्य मंदिरों, तीर्थस्थलों, मठों, आश्रमों, पवित्र नदियों, धार्मिक प्रतीकों, ग्रंथों और धार्मिक-सांस्कृतिक स्थलों की मर्यादा एवं गरिमा की रक्षा के लिए संतुलित और संवैधानिक व्यवस्था तैयार करना है। मसौदे में धार्मिक स्थलों पर अशोभनीय गतिविधियों, धार्मिक प्रतीकों एवं ग्रंथों के अनुचित या अपमानजनक उपयोग, अनुचित प्रदर्शन और विज्ञापन पर नियंत्रण से जुड़े प्रावधान सुझाए गए हैं। इसके अलावा धार्मिक परिसरों के लिए आचार-संहिता, डिजिटल एवं इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से जुड़ी गतिविधियों तथा धार्मिक स्थलों की व्यवस्था और मर्यादा बनाए रखने के लिए संस्थागत व्यवस्था का भी प्रस्ताव किया गया है। अधिवक्ता तिवारी ने स्पष्ट किया कि यह वर्तमान में लागू कानून नहीं, बल्कि एक प्रस्तावित मसौदा है। इसे विधिक परीक्षण, विशेषज्ञ विमर्श, सार्वजनिक सुझाव और आवश्यक विधायी प्रक्रिया के लिए तैयार किया गया है। मसौदा तैयार करने में अधिवक्ता हिमांशु जोशी, अधिवक्ता प्रभाकर जोशी, वरिष्ठ अधिवक्ता, अधिवक्ता भूपेश सिंह बिष्ट, नीमा, गोविंद प्रसाद और शिक्षाविद अजय जोशी ने विधिक एवं शैक्षिक सुझाव दिए। प्रेस वार्ता में प्रस्तावित कानून की आवश्यकता, प्रमुख प्रावधानों, संवैधानिक पहलुओं और उत्तराखंड की धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण पर चर्चा की गई। इस अवसर पर सुशील शाह, दिनेश जोशी, विनय किरोला, नीमा आर्य समेत कई लोग मौजूद रहे।

'हसुली' में कैद है पीढ़ियों की 'विरासत'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। पहाड़ की पगडंडियों पर चलते हुए अगर किसी बुजुर्ग महिला और बच्चों के गले पर नजर ठहर जाए तो वहां सिर्फ चांदी की चमक दिखाई नहीं देती। उस चमक में एक पूरा पहाड़ दिखाई देता है माटी की खुशबू, खेतों की मेहनत, लोकगीतों की मिठास और पीढ़ियों से चली आ रही परंपराओं की कहानी। गले में सजी वह चांदी की हसुली इसी कहानी का एक हिस्सा है। कभी उत्तराखंड के पहाड़ी गांवों में हसुली बच्चों और महिलाओं के पारंपरिक आभूषणों का अहम हिस्सा हुआ करती थी। विवाह, त्योहार, पारिवारिक समारोह या किसी खास अवसर पर पहाड़ की महिलाएं जब पारंपरिक परिधान पहनती थीं तो गले में सजी हसुली उनकी सुंदरता को अलग पहचान देती थी। लेकिन हसुली को केवल श्रृंगार कहना इसके अर्थ को छोटा कर देना होगा। यह पहाड़ की सामाजिक और सांस्कृतिक स्मृति का हिस्सा रही है।

◆पहाड़ की हसुली गले में सजी धरोहर, पीढ़ियों की कहानी
◆चांदी की चमक से कहीं ज्यादा गहरी है हसुली की पहचान
◆पहाड़ की महिलाओं के गले से उतरकर अब संदूक में सिमटी

हसुली आमतौर पर चांदी से बनाई जाती है और इसका आकार अर्धचंद्राकार या मोटे घुमावदार रूप में दिखाई देता है। अलग-अलग क्षेत्रों और समुदायों में इसके आकार, वजन और डिजाइन में अंतर मिलता है। कहीं यह साधारण होती है तो कहीं उस पर महीन नक्काशी दिखाई देती है। कहीं इसमें छोटे-छोटे घुंघरू या सजावटी तत्व जुड़े होते हैं। पहाड़ के सुनारों के लिए भी हसुली बनाना केवल धातु को आकार देना नहीं था। यह पीढ़ियों से चली आ रही एक कारीगरी थी। पुराने समय में जब बाजार दूर थे और तैयार आभूषण आसानी से उपलब्ध नहीं होते थे, गांव के सुनार ही परिवार की पसंद और सामर्थ्य के हिसाब से आभूषण तैयार करते थे। हसुली भी उसी लोककारीगरी का हिस्सा थी।

पहाड़ के समाज में बेटी की शादी सिर्फ दो व्यक्तियों का संबंध नहीं थी। इसके साथ कई परंपराएं और भावनाएं जुड़ी होती थीं। मायके से विदा होती बेटी को कपड़ों और अन्य सामान के साथ आभूषण भी दिए जाते थे। इनमें हसुली का अपना विशेष स्थान था। कई परिवारों में यह आभूषण मां से बेटी और फिर बेटी से उसकी अगली पीढ़ी तक पहुंचता रहा। इसलिए किसी पुराने संदूक में रखी हसुली केवल चांदी का गहना नहीं होती। वह मां के हाथों की याद होती है। वह नानी की कहानी होती है। वह उस घर की आर्थिक स्थिति और सामाजिक जीवन की भी एक छोटी-सी निशानी होती है। एक हसुली के साथ परिवार की कई पीढ़ियां जुड़ी हो सकती हैं।

हसुली की कहानी उस पहाड़ी महिला से भी जुड़ी है जिसने अपना जीवन खेत, जंगल और घर के बीच गुजारा। सुबह पानी लेने निकलना हो, घास काटने जंगल जाना हो, खेत में काम करना हो या घर के दूसरे काम पहाड़ की महिला का जीवन श्रम से भरा रहा है। ऐसे जीवन में गहने केवल सजने का साधन नहीं थे। वह उसकी सामाजिक पहचान का हिस्सा भी थे। त्योहार के दिन जब वही महिला अपनी पारंपरिक पोशाक पहनती, बालों में सजावट करती और गले में हसुली पहनती तो उसका रूप पहाड़ की लोकसंस्कृति का जीवंत चित्र बन जाता। हसुली की चमक में उस महिला का आत्मसम्मान भी दिखाई देता था।

समय बदला तो पहाड़ का पहनावा भी बदलने लगा। गांवों से पलायन हुआ। नई पीढ़ी शहरों में पहुंची। कपड़े बदले, जीवनशैली बदली और आभूषणों की पसंद भी बदल गई। भारी पारंपरिक आभूषणों की जगह हल्के और आधुनिक डिजाइन के गहनों ने ले ली। नतीजा यह हुआ कि कभी रोजमर्रा और त्योहारों में दिखाई देने वाली हसुली अब कई घरों में संदूक के भीतर सुरक्षित रखी मिलती है। बुजुर्ग महिलाओं के गले में इसकी चमक अभी भी दिखाई देती है, लेकिन नई पीढ़ी में यह दृश्य लगातार कम हो रहा है। यह बदलाव सिर्फ फैशन का बदलाव नहीं है। यह उस लोकसंस्कृति के धीरे-धीरे बदलने की कहानी भी है जो कभी पहाड़ के दैनिक जीवन का हिस्सा थी।

आज जब उत्तराखंड अपनी लोकसंस्कृति और पारंपरिक पहचान को पर्यटन से जोड़ने की बात कर रहा है, तब हसुली जैसे आभूषणों को सिर्फ संग्रहालय की वस्तु बनाकर नहीं छोड़ा जा सकता। जरूरत है कि स्थानीय कारीगरों को प्रोत्साहन मिले। पारंपरिक डिजाइन को आधुनिक जरूरतों के साथ जोड़ा जाए। युवा पीढ़ी को इन आभूषणों की कहानी बताई जाए और स्थानीय हस्तशिल्प को बाजार मिले। क्योंकि संस्कृति सिर्फ किताबों में नहीं बचती।

वह तब बचती है जब कोई बेटी अपनी मां की हसुली पहनकर आईने में खुद को देखती है और पूछती हैकृमां, यह तुम्हें किसने दी थी? और मां मुस्कुराकर कहती हैकृमेरी मां ने। यहीं से परंपरा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचती है। हसुली की असली कीमत उसके चांदी के वजन में नहीं है। उसकी कीमत उस कहानी में है जो उसके साथ चलती है। यह पहाड़ की उन बेटियों की कहानी है जिन्होंने खेतों में पसीना बहाया, जंगलों से घास ढोई, परिवार संभाला और फिर भी त्योहार के दिन गले में हसुली सजाकर अपने पहाड़ की पहचान को जीवित रखा। आज हसुली भले ही कम दिखाई देती हो, लेकिन जब तक किसी पहाड़ी संदूक में वह सुरक्षित है, तब तक पहाड़ की एक कहानी भी सुरक्षित है। हसुली को बचाना यानी सिर्फ एक आभूषण को बचाना नहीं पहाड़ की स्मृति को बचाना है।

ईएनटी डॉक्टर के बिना जिला अस्पताल भटक रहे लोग

नई टिहरी(आरएनएस)। जिला अस्पताल बौराड़ी में करीब एक साल से ईएनटी चिकित्सक नहीं होने से कान, नाक और गले से संबंधित बीमारियों के मरीजों को उपचार के लिए परेशान होना पड़ रहा है।

अस्पताल में विशेषज्ञ चिकित्सक नहीं होने के कारण मरीजों को उपचार के लिए नरेंद्रनगर, ऋषिकेश और देहरादून जाना पड़ रहा है। इससे मरीजों को अतिरिक्त खर्च के साथ समय भी गंवाना पड़ रहा है।जिला मुख्यालय स्थित अस्पताल में रोजाना बड़ी संख्या में मरीज उपचार के लिए पहुंचते हैं। इनमें कान दर्द, कान में संक्रमण, सुनने में परेशानी, कान से पानी या मवाद आने, नाक बंद रहने, साइनस, टॉन्सिल, गले में संक्रमण से जुड़ी दिक्कतों वाले मरीज शामिल रहते हैं। ईएनटी डॉक्टर नहीं होने के कारण ऐसे मरीजों को दूसरे अस्पतालों की ओर भेजना पड़ता है। जिले में एकमात्र ईएनटी चिकित्सक नरेंद्रनगर स्थित उप जिला अस्पताल में कार्यरत हैं।

नरेंद्रनगर जिला मुख्यालय से करीब 52 किलोमीटर दूर है। ऐसे में बौराड़ी अस्पताल पहुंचने वाले मरीजों को विशेषज्ञ से परामर्श और जांच के लिए नरेंद्रनगर जाना पड़ता है। जटिल मामलों में मरीजों को ऋषिकेश, देहरादून के अस्पतालों का रुख करने को मजबूर होना पड़ रहा। पर्वतीय क्षेत्र में मरीजों और उनके परिजनों के लिए बार-बार लंबी दूरी तय करना आर्थिक दृष्टि से परेशानी का कारण बन रहा है।स्थानीय निवासी गब्बर सिंह नेगी का कहना है कि लोग कान, नाक और गले से जुड़ी समस्या होने पर जिला अस्पताल पहुंचते हैं, लेकिन ईएनटी चिकित्सक नहीं होने से उन्हें यहां उपचार नहीं मिल पाता।

राजेंद्र सिंह रावत का कहना है कि जिला मुख्यालय के अस्पताल में लंबे समय से ईएनटी विशेषज्ञ की कमी बनी हुई है। ऐसे में सामान्य बीमारियों के मरीजों को भी दूसरे शहरों की दौड़ लगानी पड़ रही है। सरकार स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने का दावा कर रही है लेकिन जिला अस्पताल में जरूरी विशेषज्ञ चिकित्सक नहीं होने से लोगों को लाभ नहीं मिल पा रहा है।कमला देवी का कहना है कि कान, नाक और गले की बीमारी होने पर अस्पताल आने के बाद भी ईएनटी चिकित्सक नहीं मिलने से मरीजों को वापस लौटना पड़ता है। बाहर इलाज कराने में आने-जाने और जांच का खर्च बढ़ जाता है।

पीड़ित परिवार को दिया जरूरत का सामान

श्रीनगर गढ़वाल(आरएनएस)। बुघाणी रोड के समीप बस्ती में भीषण अग्निकांड से प्रभावित परिवार की मदद के लिए श्री राम सेवा दल के सदस्य आगे आए। दल के सदस्यों ने पीड़ित परिवार से मुलाकात कर उन्हें घरेलू सामान उपलब्ध कराया। इस दौरान पीड़ित परिवार को रोजमर्रा की जरूरत का सामान दिया गया। सदस्यों ने संकट की इस घड़ी में उन्हें हरसंभव सहयोग का भरोसा भी दिलाया।

गिंगम प्रिंट वाली स्कर्ट फिर चलन में आई, जानिए स्टाइल करने के सुझाव

गिंगम प्रिंट एक ऐसा कपड़ा है, जो हमेशा से ही फैशन में रहा है। यह प्रिंट अपनी खास डिजाइन और रंगों के कारण महिलाओं के बीच काफी लोकप्रिय है। गिंगम प्रिंट की स्कर्ट को पहनकर आप न केवल आरामदायक महसूस करेंगी, बल्कि स्टाइलिश भी नजर आएंगे। आइए आज हम आपको गिंगम प्रिंट की स्कर्ट को अलग-अलग तरीकों से पहनने के कुछ आसान और प्रभावी तरीके बताते हैं, जो आपके लुक को खास बना देगा।

टी-शर्ट के साथ करें मेल : गिंगम प्रिंट की स्कर्ट को टी-शर्ट के साथ पहनना एक बेहतरीन तरीका हो सकता है। आप अपनी पसंदीदा रंग की टी-शर्ट को गिंगम प्रिंट की स्कर्ट के साथ पहन सकती हैं। यह मेल न केवल आपको आरामदायक महसूस कराएगा, बल्कि आपको एक स्मार्ट लुक भी देगा। अगर आपकी स्कर्ट हल्के रंग की है तो गहरे रंग की टी-शर्ट चुनें और इसके विपरीत भी। इससे आपका लुक और भी खास लगेगा।

जैकेट के साथ बनाएं स्टाइलिश लुक : अगर आप अपने गिंगम प्रिंट की स्कर्ट को थोड़ा औपचारिक टच देना चाहती हैं तो उसके ऊपर एक अच्छी फिटिंग वाली जैकेट पहन सकती हैं। यह मेल ऑफिस मीटिंग या किसी विशेष अवसर पर जाने के लिए सही है। जैकेट आपके लुक को पेशेवर और आकर्षक बनाएगी, जिससे आप हर जगह अलग दिखेंगी। इसके साथ एक साधारण ब्लाउज या शर्ट पहनें और हल्के गहनों का उपयोग करें. ताकि आपका लुक संतुलित और मनोहर लगे।

स्नीकर्स के साथ बनाएं रोजमर्रा का लुक : गिंगम प्रिंट की स्कर्ट को स्नीकर्स के साथ पहनना एक रोजमर्रा और आरामदायक तरीका हो सकता है। यह लुक खासकर तब अच्छा लगता है जब आप किसी शॉपिंग या दोस्तों के साथ बाहर घूमने जा रही हों। इसके अलावा यह आपके रोजमर्रा के कामों में भी सहायक रहेगा। स्नीकर्स के साथ गिंगम प्रिंट की स्कर्ट पहनकर आप न केवल आरामदायक महसूस करेंगी, बल्कि स्टाइलिश भी दिखेंगी। इसके साथ आप हील भी पहन सकती हैं।

बेल्ट लगाएं : अगर आपकी गिंगम प्रिंट की स्कर्ट ढीली है तो उसमें बेल्ट लगाकर उसे स्टाइलिश बनाया जा सकता है। बेल्ट आपकी कमर को हाइलाइट करेगी और लुक को खास बनाएगी। इसके अलावा यह आपके पूरे लुक को एक नया आयाम देगा। बेल्ट चुनते समय ध्यान रखें कि वह आपकी स्कर्ट के रंग या प्रिंट से मेल खाती हो, ताकि आपका लुक संतुलित और मनोहर लगे। इस तरह आप आसानी से अपने गिंगम प्रिंट की स्कर्ट को नया अंदाज दे सकती हैं।

क्या कम ब्लड प्रेशर से चक्कर आने पर कॉफी पीना सही है? जानें सच्चाई

कम ब्लड प्रेशर एक ऐसी स्थिति है, जिसमें रक्तचाप सामान्य से कम होता है। इसे हाइपोटेंशन भी कहा जाता है। इससे चक्कर आना, कमजोरी महसूस होना और थकान जैसी समस्याएं हो सकती हैं। कई लोग मानते हैं कि कॉफी पीने से रक्तचाप बढ़ता है और इससे चक्कर कम हो सकते हैं। आइए जानते हैं कि क्या वाकई कॉफी पीने से कम ब्लड प्रेशर के कारण चक्कर आने की समस्या ठीक हो सकते हैं या नहीं।

कॉफी में मौजूद कैफीन का असर : कॉफी में मौजूद कैफीन एक तरह का उत्तेजक होता है, जो थोड़े समय के लिए रक्तचाप को बढ़ा सकता है। यह सच है कि कुछ समय के लिए कॉफी पीने से आपका रक्तचाप थोड़ा बढ़ सकता है, लेकिन यह असर बहुत ही अस्थायी होता है। इसके बाद आपका रक्तचाप फिर से सामान्य हो जाता है। इसलिए, यह कहना गलत होगा कि कॉफी हमेशा के लिए आपका रक्तचाप स्थायी रूप से बढ़ा देती है।

सेहत पर पड़ सकता है असर : कॉफी का ज्यादा सेवन सेहत पर असर डाल सकता है। इससे नींद की गुणवत्ता खराब हो सकती है, दिल की धड़कन तेज हो सकती है और पेट में जलन हो सकती है। इसलिए, कम ब्लड प्रेशर वाले लोगों को सीमित मात्रा में ही कॉफी का सेवन करना चाहिए। अगर आपको नियमित रूप से चक्कर आते हैं तो डॉक्टर से संपर्क करें और सही उपचार करवाएं। कॉफी का सेवन सिर्फ थोड़ी देर के लिए राहत दे सकता है। संतुलित डाइट का महत्व कम ब्लड प्रेशर वाले लोगों के लिए संतुलित डाइट लेना जरूरी है। हरी सब्जियां, फल, मेवे और प्रोटीन युक्त खाने की चीजें आपके लिए फायदेमंद हो सकती हैं। ये पोषक तत्व आपके शरीर को ऊर्जा देते हैं और रक्तचाप को स्थिर रखने में मदद करते हैं। इसके अलावा पानी पीना भी जरूरी है, ताकि शरीर में पानी की कमी न हो और थकान और चक्कर जैसी समस्याओं से बचा जा सके। संतुलित डाइट से आपकी सेहत अच्छी बनी रहती है। अगर आपको कम ब्लड प्रेशर की समस्या अक्सर होती है तो आपको केवल कॉफी पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। बेहतर यही होगा कि आप डॉक्टर से परामर्श करें और उनकी बताई डाइट लें, दवाइयां खाएं और सलाह का पालन करें।

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

—प्रबंधक विज्ञापन

पहाड़ की सियासत में मुद्दों की 'बौछार'

◆पहाड़ों पर आफत की बारिश के बीच बढ़ा सियासी तापमान
◆भाजपा का राहत पर दांव और कांग्रेस का अव्यवस्था पर वार
◆कांग्रेस के तीखे सवालों पर भाजपा का राहत-बचाव पर ढाल
◆2027 की दस्तक में बारिश के बीच जमीन पर उतरीं पार्टियां

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड में मानसून की बारिश भले ही पहाड़ों को भिगो रही हो, लेकिन प्रदेश का राजनीतिक तापमान लगातार बढ़ रहा है। कहीं सड़क और पुल बहने का मुद्दा है तो कहीं आपदा राहत और पुनर्वास को लेकर सरकार पर सवाल उठ रहे हैं। दूसरी ओर विधानसभा चुनाव 2027 की दस्तक के साथ भाजपा और कांग्रेस दोनों ने संगठन को जमीन पर उतारना शुरू कर दिया है। ऐसे में इस बार की बरसात सिर्फ नदियों और नालों का जलस्तर नहीं बढ़ा रही, बल्कि सियासत की हलचल भी तेज कर रही है। मानसून के दौरान उत्तराखंड में हर साल सड़कें टूटती हैं, पुल क्षतिग्रस्त होते हैं और गांवों का संपर्क जिला मुख्यालयों से कटता है। इस बार भी कई इलाकों में बारिश और भूस्खलन ने सरकार की तैयारियों की परीक्षा शुरू कर दी है। यही घटनाएं अब विपक्ष के लिए सरकार को घेरने का राजनीतिक हथियार बन रही हैं। कांग्रेस सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा, पलायन और आपदा प्रबंधन जैसे मुद्दों को लेकर सरकार पर हमलावर है तो भाजपा विकास कार्यों और आपदा के दौरान किए जा रहे राहत एवं बचाव अभियानों को अपनी उपलब्धि के रूप में सामने रख रही है।

उत्तराखंड जैसे पर्वतीय राज्य में मानसून हमेशा सरकार के लिए बड़ी चुनौती लेकर आता है। सड़क बंद होने से लेकर गांवों तक राशन और जरूरी दवाइयां पहुंचाने तक प्रशासन की क्षमता की परीक्षा होती है। चारधाम यात्रा के बीच बारिश ने चुनौती को और बढ़ा दिया है। सरकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि आपदा के दौरान राहत और बचाव कार्य तेजी से हों तथा प्रभावित क्षेत्रों में सामान्य स्थिति जल्द बहाल की जाए।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में सरकार लगातार अधिकारियों से तैयारियों और राहत कार्यों की जानकारी ले रही है। सरकार का दावा है कि संवेदनशील क्षेत्रों में मशीनरी और बचाव दलों को अलर्ट रखा गया है। लेकिन विपक्ष का सवाल है कि हर साल मानसून आने से पहले तैयारियों के दावे किए जाते हैं, फिर बारिश शुरू होते ही वही सड़कें और वही पुल क्यों टूटते हैं? यही सवाल आने वाले दिनों में राजनीतिक बहस का बड़ा हिस्सा बन सकता है।

2027 विधानसभा चुनाव को देखते हुए भाजपा ने संगठन को चुनावी मोड में लाना शुरू कर दिया है। पार्टी का फोकस बूथ स्तर तक संगठन को मजबूत करने और उन विधानसभा क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देने का है, जहां पिछली बार पार्टी को अपेक्षित सफलता नहीं मिली थी। भाजपा नेतृत्व के सामने सत्ता में लगातार तीसरी बार वापसी की चुनौती है। ऐसे में संगठनात्मक गतिविधियों को तेज करने के साथ ही विधायकों के खिलाफ स्थानीय स्तर पर मौजूद नाराजगी को कम करना भी पार्टी की प्राथमिकताओं में शामिल है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की सरकार अपने कार्यकाल की उपलब्धियों को जनता तक पहुंचाने की तैयारी में है। समान नागरिक संहिता, महिला सशक्तीकरण, रोजगार, निवेश और विकास परियोजनाओं के साथ सरकार चारधाम और सीमांत क्षेत्रों में किए जा रहे कामों को भी चुनावी विमर्श का हिस्सा बनाना चाहती है।

दूसरी तरफ कांग्रेस मानसून को सरकार के खिलाफ मुद्दे खड़े करने के अवसर के रूप में देख रही है। पार्टी सड़क, स्वास्थ्य सेवाओं, बेरोजगारी, महंगाई और पलायन जैसे पुराने मुद्दों के साथ आपदा प्रबंधन को भी प्रमुखता से उठा रही है। कांग्रेस के सामने सबसे बड़ी चुनौती केवल सरकार पर हमला करना नहीं, बल्कि इन मुद्दों को जनता के बीच एक मजबूत राजनीतिक विकल्प में बदलना है। संगठन में नई ऊर्जा भरने के प्रयास इसी दिशा में देखे जा रहे हैं। पार्टी नेताओं का लगातार जिलों और विधानसभा क्षेत्रों में सक्रिय होना इस बात का संकेत है कि चुनावी तैयारी अब केवल बैठकों तक सीमित नहीं रहने वाली।

उत्तराखंड की राजनीति में पहाड़ का दर्द कभी पुराना नहीं होता। सड़क टूटी तो सवाल विकास का, अस्पताल दूर हुआ तो सवाल स्वास्थ्य व्यवस्था का, युवा बाहर गया तो सवाल रोजगार का और गांव खाली हुआ तो सवाल पलायन का। मानसून इन सभी सवालों को अचानक सामने ला देता है। बरसात में बंद सड़क किसी सरकारी आंकड़े का हिस्सा नहीं होती। वह उस गांव के लिए जीवन की लाइन होती है। पुल टूटना किसी फाइल में दर्ज नुकसान भर नहीं होता, बल्कि कई परिवारों के लिए बाजार, स्कूल और अस्पताल से संपर्क टूट जाना होता है। यही वजह है कि मानसून के दौरान सामने आने वाली छोटी-छोटी घटनाएं भी चुनावी साल में बड़ा राजनीतिक संदेश बन सकती हैं।

विधानसभा चुनाव अभी दूर हैं, लेकिन राजनीतिक दलों के लिए चुनावी घड़ी चल चुकी है। आने वाले महीनों में विकास बनाम व्यवस्था, सरकार की उपलब्धियां बनाम स्थानीय नाराजगी और राष्ट्रीय मुद्दे बनाम उत्तराखंड के स्थानीय सवालों के बीच मुकाबला तेज होगा। भाजपा अपने मजबूत संगठन और सरकार की उपलब्धियों के सहारे मैदान में उतरने की तैयारी कर रही है। कांग्रेस सत्ता विरोधी माहौल को अपने पक्ष में करने की कोशिश करेगी। क्षेत्रीय दल और अन्य राजनीतिक ताकतें भी अपनी जगह तलाशेंगी। ऐसे में इस मानसून की बारिश केवल पहाड़ की सड़कों और नदियों की परीक्षा नहीं ले रही। यह सरकार की तैयारी, प्रशासन की कार्यक्षमता और विपक्ष की राजनीतिक सक्रियता तीनों की परीक्षा है। आने वाले दिनों में बारिश थमेगी, सड़कें खुलेंगी और मौसम साफ होगा। लेकिन 2027 की राजनीति में इस बरसात के दौरान उठे सवाल शायद इतनी जल्दी नहीं थमेंगे।

शब्द सामर्थ्य -033

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. राजद प्रमुख 6. रखवाला, रक्षा करने वाला 7. दयालु, रहम करने वाला (उ.) 10. युग्म, जोड़ा, एक राशि, एक फिल्म अभिनेता 13. कैदखाना, जेल, हिरासत 15. जानकी, जनकनंदनी 17. व्यर्थ की बात, बकबक 18. नारी, स्त्री, महिला 21. विक्रय करना 22. वाणी, कथन, वादा 24. ताश में दस अंकों वाला पत्ता 25. नगर का, नागरिक, चतुर।

ऊपर से नीचे

1. बेफ्रिक, निश्चिंत, जिसे कोई परवाह न हो 2. मूर्ति 3. दोस्त, प्रेमी 4. कुशल, विशेषज्ञ 5. बगुला 8. झुका हुआ, झुकाया गया, नत 9. इधर-उधर, पास पड़ोस 11. किस्मत, तकदीर, भाग्य 14. बंदर, मर्कट, कपि 16. शक्तिशाली, बलवान 18. संतान, संतति 19. अस्तबल, घुड़साल 20. राजी करना, रूठे हुए को प्रसन्न करना 23. सरिता, नदिया, नद।

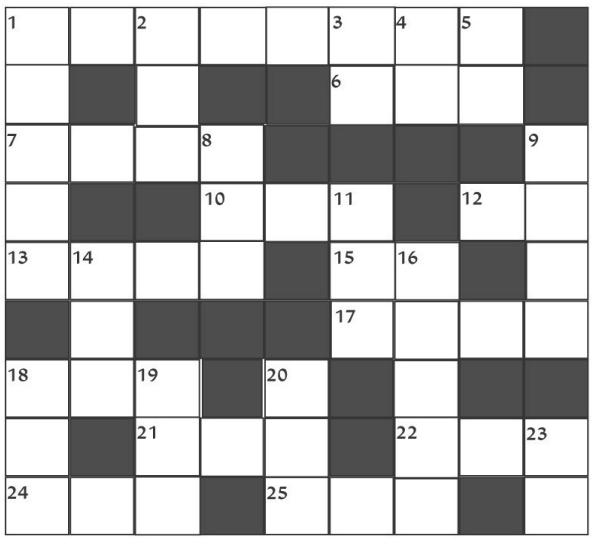

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 32 का हल

मा	म	ला	■	सि	वा	य	■	कि
लि	■	चा	ह	त	■	म	म	ता
क	सू	र	■	म	ग	न	■	ब
■	र	■	■	■	द	■	■	■
क	मा	न	■	पा	र	स	■	स
मी	■	म	जा	ल	■	न	क	ली
ना	दा	न	■	ना	र	द	■	का
■	मि	■	■	■	तौं	■	■	■
सु	नी	ल	■	अ	धी	र	■	जी

जहरीली हवा से फेफड़ों को बचाएगी ये हर्बल टी, जानें इसके अनेको लाभ

तापमान में गिरावट के कारण आमतौर पर वायु प्रदूषण का स्तर बढ़ जाता है। इस मौसम में हवा की गुणवत्ता खराब हो जाती है, जिससे लोगों को सांस लेने में काफी तकलीफ होती है। प्रदूषित हवा में सांस लेने से अस्थमा, ब्रोंकाइटिस, निमोनिया और यहां तक कि फेफड़ों की बीमारियां जैसी कई समस्याएं हो जाती हैं। इस मौसम में अपने फेफड़ों को धूल के कणों से बचाना बहुत जरूरी होता है।

बढ़ते वायु प्रदूषण से बचने के लिए खानपान में बदलाव करना फायदेमंद साबित होता है। एक्सपर्ट के अनुसार, घरेलू उपायों को अपनाकर भी वायु प्रदूषण के कारण होने वाली फेफड़ों से जुड़ी बीमारियों से काफी हद तक बचा जा सकता है। इसमें से एक घरेलू उपाय है हर्बल चाय। इस लेख में हम जिस हर्बल चाय के बारे में बताने जा रहे हैं वह न केवल वायु प्रदूषण से फेफड़ों को बचाती है, बल्कि प्रतिरक्षा प्रणाली (इम्यून सिस्टम) को भी मजबूत बनाती है। आइए जानते हैं इस हर्बल चाय के फायदे और इसे बनाने की विधि।

इस चाय को पीने के फायदे: यह चाय प्राकृतिक जड़ी बूटियों और मसालों से तैयार होती है जो आमतौर पर हर घर में उपलब्ध होती है। यह अपने औषधीय गुणों के लिए जानी जाती हैं। इस चाय को पीने से इम्यूनिटी बढ़ती है। कोरोना के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। ऐसे कठिन समय में इम्यूनिटी मजबूत होना बहुत जरूरी है।

इसके अलावा, तापमान में गिरावट के साथ ही वायु प्रदूषण का स्तर बढ़ गया है। दूषित हवा में सांस लेने से फेफड़ों से संबंधित कई समस्याएं हो सकती हैं। इस चाय को रोज पीने से फेफड़े साफ रहते हैं और इनसे जुड़ी बीमारियां भी दूर हो जाती हैं। सिर्फ यही नहीं, यह चाय आपकी आंतरिक रक्षा प्रणाली को भी मजबूत करती है।

हर्बल चाय बनाने की विधि: इस हर्बल चाय को घर पर बनाना बहुत आसान है। इसे बनाने में इस्तेमाल की जाने वाली सभी सामग्री हर घर के किचन में मौजूद होती है। आइए जानते हैं इस हर्बल चाय को बनाने की विधि।

आवश्यक सामग्री

1 इंच कद्दूकस की हुई अदरक

1 छोटी दालचीनी स्टिक

आधा चम्मच तुलसी के पत्ते

1 चम्मच अजवाइन

3 पिपरकॉर्न

2 कुचली हुई हरी इलायची

एक चौथाई चम्मच सौंफ

बनाने की विधि

सभी सामग्रियों को एक गहरे पैन में डालें और इसमें एक गिलास पानी डालें। सभी सामग्री को 10 मिनट के लिए उबलने दें और फिर एक कप में चाय को छान लें। स्वाद को बेहतर बनाने के लिए आप अपनी चाय में कच्चा, जैविक शहद या गुड़ मिला सकते हैं।

इस हर्बल चाय को पीने का सही समय: अगर आप हर सुबह कॉफी पीने के शौकीन हैं, तो इससे परहेज करें। कॉफी की बजाय रोजाना सुबह हर्बल चाय पीने से इम्युनिटी बढ़ती है और फेफड़े साफ रहते हैं। आपको यह चाय दिन में कई बार पीने की जरूरत नहीं है। सुबह एक बार इस चाय का सेवन पर्याप्त है। इससे आपको भरपूर फायदा मिलेगा।

इस चाय में कई तरह के मसालों का इस्तेमाल किया जाता है जिससे शरीर में गर्मी पैदा होती है। चाय से आपको गर्मी महसूस होती है , तो पूरे दिन पर्याप्त पानी पिएं। सर्दियों में आमतौर पर लोग कम पानी पीते हैं। इस मौसम में आपको इन्फ्यूज्ड वाटर या पानी युक्त फल और सब्जियों को अपने आहार में शामिल करना चाहिए। यदि आपको कोई गंभीर स्वास्थ्य समस्या है, तो इस चाय का सेवन करने से पहले अपने डॉक्टर से सलाह लें।

ब्लड प्रेशर को कंट्रोल करने के आसान घरेलु उपाय

नीम्बू का सेवन हमारे स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होता है। गलत जीवन शैली के कारण ज्यादातर लोगों को सेहत से जुड़ी कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन्हीं समस्याओं में से एक समस्या है ब्लड प्रेशर की समस्या जो सेहत के लिए बहुत हानिकारक होते हैं। स्वस्थ जीवन जीने के लिए ब्लड प्रेशर का नॉर्मल होना बहुत जरूरी होता है।

ब्लड प्रेशर को कण्ट्रोल रखने के आसान उपाय:

नींबू पानी पीने से हाई ब्लड प्रेशर की समस्या कंट्रोल में रहती हैं। ब्लड प्रेशर की समस्या को कंट्रोल में रखने के लिए रोजाना सुबह एक गिलास गुनगुने पानी में आधा नींबू निचोड़कर पियें। लहसुन में भरपूर मात्रा में नाइट्रिक एसिड और हाइड्रोजन सल्फाइड मौजूद होता है। लहसुन का सेवन करने से ब्लड में थक्के नहीं जमते हैं। जिससे ब्लड प्रेशर के साथ-साथ कोलेस्ट्रॉल भी कंट्रोल में रहता है।

हाई ब्लड प्रेशर को कंट्रोल में रखने के लिए रोजाना नारियल पानी का सेवन करें। रोजाना खाली पेट में नारियल पानी का सेवन करने से हाई ब्लड प्रेशर की समस्या दूर हो जाती है। लो ब्लड प्रेशर की समस्या में शकरकंद का सेवन बहुत फायदेमंद होता है। दिन में दो बार एक कप शकरकंद का जूस पीने से ब्लड प्रेशर की समस्या दूर हो जाती है।

डीप वी-नेक आउटफिट में रकुल प्रीत सिंह ने ढाया कहर

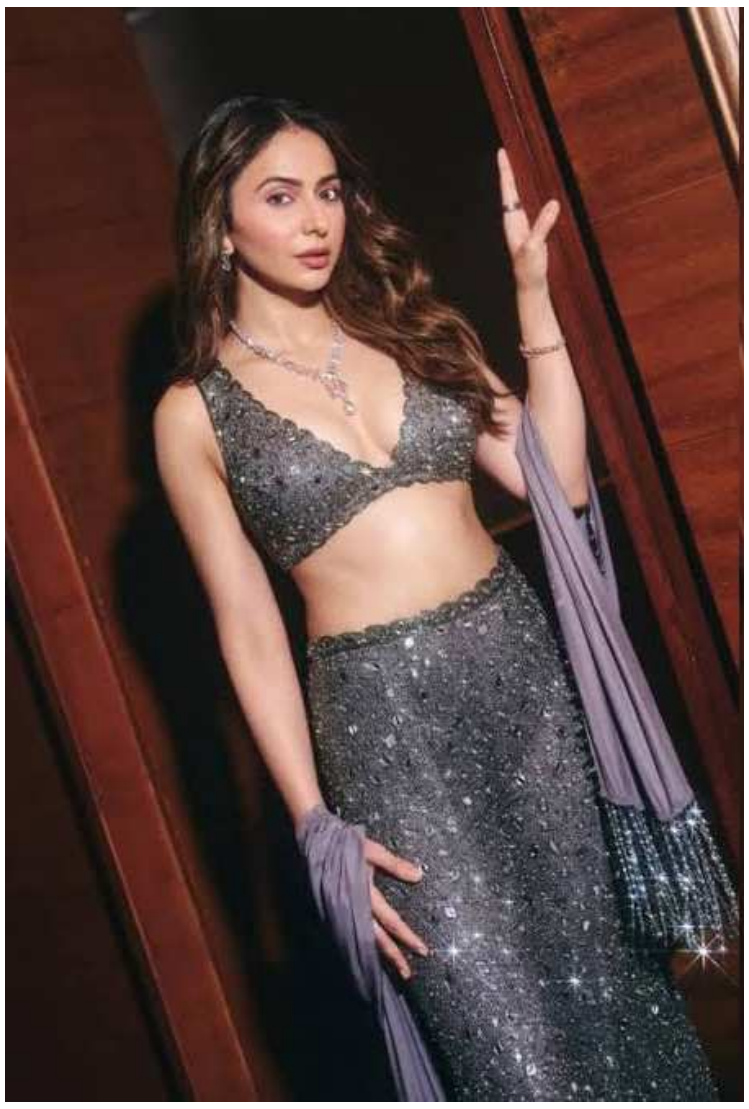

बॉलीवुड की खूबसूरत अभिनेत्री रकुल प्रीत सिंह एक्टिंग के साथ-साथ अपने लाजवाब फैशन सेंस के लिए भी जानी जाती हैं। वेस्टर्न आउटफिट हो या ट्रेडिशनल एथनिक वियर, रकुल हर लुक को बेहद ग्रेस और कॉन्फिडेंस के साथ कैरी करती हैं। हाल ही में एक्ट्रेस ने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम अकाउंट पर अपने नए फोटोशूट की कुछ बेहद हॉट और ग्लैमरस तस्वीरें शेयर की हैं, जिसने इंटरनेट पर आते ही तहलका मचा दिया है।

इस नए अवतार में रकुल का बोल्ड और सिजलिंग लुक देखने को मिल रहा है, जिसे देखकर फैंस अपनी नजरें नहीं हटा पा रहे हैं। तस्वीरों में रकुल मिरर-वर्क को-ऑर्ड सेट पहने नजर आ रही हैं।

रकुल ने चारकोल/डार्क ग्रे शेड का एक बेहद खूबसूरत को-ऑर्ड सेट पहना है। इसके ऊपरी हिस्से में एक प्लंजिंग डीप वी-नेकलाइन वाला स्लीवलेस ब्लाउज है। इस ब्लाउज पर मिरर वर्क और क्रिस्टल्स का बेहद बारीक और चमकीला काम किया गया है।

बॉटम के लिए रकुल ने इसी मैचिंग फैब्रिक का बॉडी-हगिंग और नीचे से फ्लेयर्ड स्कर्ट-पैंट कैरी किया है। यह आउटफिट उनकी परफेक्टली टोंड मिड्रिफ और कर्वी फिगर को बेहद खूबसूरती से फ्लॉन्ट कर रहा है।

अपने इस बोल्ड लुक में एलीगेंस जोड़ने के लिए उन्होंने मैचिंग लैवेंडर-ग्रे टोन का दुपट्टा कैरी किया है। इस दुपट्टे के किनारों पर लगी शिमरी फ्रिंज उनके हर मूवमेंट में एक ड्रामेटिक और रॉयल टच जोड़ रही है। तस्वीरों में रकुल एक से बढ़कर एक अंदाज में पोज देती नजर आ रही हैं। कभी लकड़ी के भारी दरवाजे का सहारा लेकर कैमरे की तरफ देख रही हैं, तो कभी साइड-प्रोफाइल पोज देते हुए अपनी परफेक्ट बॉडी लाइन को फ्लॉन्ट कर रही हैं।

आदित्य रॉय कपूर मिलाप मिलन जावेरी संग पहली बार करेंगे काम

आशिकी 2, मलंग और मेट्रो... इन दिनों जैसी फिल्मों से अपनी रोमांटिक छवि बनाने वाले अभिनेता आदित्य रॉय कपूर अब एक बार फिर बड़े पर्दे पर खास लव स्टोरी लेकर आने वाले हैं। इस बार वह पहली बार निर्देशक मिलाप मिलन जावेरी के साथ हाथ मिला रहे हैं। दोनों की यह फिल्म रोमांस, एक्शन और संगीत का दमदार मेल होगी, जिसे निर्माता भूषण कुमार बड़े स्तर पर बना रहे हैं। निर्देशक मिलाप मिलन जावेरी ने आदित्य रॉय कपूर के साथ अपनी पहली फिल्म को लेकर खुशी जाहिर की है। उन्होंने कहा, आदित्य प्यार को बेहद गहराई के साथ पर्दे पर उतारते हैं। आशिकी 2 के बाद से दर्शकों ने उन्हें जुनून और टूटे दिल की कहानियों में खूब पसंद किया है। इस नई फिल्म का किरदार कई परतों वाला होगा। मुझे नहीं लगता कि इस सफर को उनसे बेहतर कोई और निभा सकता था। वहीं, निर्माता भूषण कुमार ने आदित्य के साथ अपनी पुरानी साझेदारी को याद करते हुए कहा, आदित्य के साथ हमारा रिश्ता कई सालों पुराना है और हमने साथ मिलकर ऐसी फिल्में दी हैं जिन्हें दर्शक आज भी पसंद करते हैं। आशिकी 2 से लेकर मेट्रो... इन दिनों तक हर फिल्म हमारे लिए खास रही है। हमारे बीच शानदार क्रिएटिव तालमेल है और मुझे खुशी है कि हम एक बार फिर एक ऐसी कहानी के लिए साथ आ रहे हैं, जो भावनात्मक और बड़े पैमाने पर बनाई जाएगी।

फिल्म की शूटिंग इसी साल के आखिर में शुरू होने की तैयारी है। इसके बाद पोस्ट-प्रोडक्शन का काम पूरा कर इसे साल 2027 में सिनेमाघरों में रिलीज किया जाएगा। फिलहाल फिल्म की बाकी स्टारकास्ट और टाइटल का खुलासा नहीं किया गया है लेकिन मेकर्स का कहना है कि आने वाले समय में इससे जुड़ी और जानकारियां साझा की जाएंगी।

फिल्म की घोषणा करते हुए मिलाप मिलन जावेरी ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर भी एक खास पोस्ट साझा किया था। उन्होंने लिखा, इस बार आशिकी पूरी दीवानियत से होगी। मुझे बेहद खुशी है कि मैं अपनी अगली फिल्म की घोषणा कर रहा हूं। यह एक इंटेंस, हिंसक और म्यूजिकल लव स्टोरी है, जिसमें मेरे प्रिय मित्र और शानदार अभिनेता आदित्य रॉय कपूर मुख्य भूमिका निभा रहे हैं।

गाजीवाली में हाईवे किनारे बस्ती में जलभराव, बढ़ी ग्रामीणों की परेशानी

हरिद्वार(आरएनएस)। सोमवार की बारिश के बाद गाजीवाली ग्राम पंचायत की हाईवे किनारे बस्ती (नई गाजीवाली) में फिर जलभराव हो गया। करीब एक माह पहले भी बस्ती में पानी भर गया था। ग्रामीणों के अनुसार पिछली बार जमा पानी पूरी तरह सूख भी नहीं पाया था। अब दोबारा बारिश होने से परेशानी और बढ़ गई है। अंबेडकर पार्क से बस्ती की ओर आने वाले रास्ते पर घुटनों से ऊपर तक पानी जमा होने से आवागमन बंद है। मुख्य आबादी और दुकानों तक जाने के लिए ग्रामीणों को हाईवे की ओर से करीब डेढ़ किलोमीटर का चक्कर लगाना पड़ रहा है। सोहन पाल सिंह, महेंद्र सिंह, अशोक कुमार, देवराज और घनश्याम आदि ग्रामीणों ने बताया कि पहले जनप्रतिनिधियों की ओर से वन क्षेत्र से हाईवे पार कर बस्ती की ओर आने वाले पानी को जलभराव की वजह बताया जाता था।अब उस पानी को बरसाती नाले की ओर मोड़ दिया गया है और बस्ती की ओर उसका आना बंद है। इसके बावजूद बारिश का पानी हाईवे किनारे बस्ती में जमा हो रहा है और निकल नहीं पा रहा है। ग्रामीणों ने बताया कि लगातार पानी भरे रहने से मच्छरों की संख्या बढ़ गई है। वन क्षेत्र पास होने से सांप-बिच्छू जैसे जहरीले जंतुओं के घरों तक पहुंचने की चिंता भी बनी हुई है। लंबे समय तक पानी और नमी रहने से घरों की नींव कमजोर होने की आशंका भी ग्रामीण जता रहे हैं।

श्रीनगर डिपो की आय में सुधार, काउंसलिंग और रूट बदलाव से बढ़े यात्री

श्रीनगर गढ़वाल(आरएनएस)। बरसात के कारण घटी यात्रियों की संख्या से प्रभावित परिवहन निगम के श्रीनगर डिपो की कमाई अब धीरे-धीरे पटरी पर लौटने लगी है। एनआईटी और गढ़वाल केंद्रीय विवि में चल रही प्रवेश काउंसलिंग के कारण बाहर से आने वाले छात्र और उनके अभिभावक रोडवेज बसों का उपयोग कर रहे हैं। साथ ही रूट बदलाव से डिपो की आय में सुधार हो रहा है।एनआईटी और गढ़वाल विवि में प्रवेश प्रक्रिया शुरू होने से छात्रों व अभिभावकों की आवाजाही बढ़ी है जिससे बसों में यात्रियों की संख्या बेहतर हुई है। वहीं कांवड़ यात्रा के कारण हरिद्वार जाने वाली बसें फिलहाल मोतीचूर तक संचालित हो रही हैं। इसके अलावा श्रीनगर से दिल्ली और चंडीगढ़ जाने वाली तीन बस सेवाएं तथा शाम की दिल्ली बस सेवा देहरादून होकर चलाई जा रही है जिससे देहरादून के यात्रियों को अधिक विकल्प मिलने के साथ इन बसों में यात्री भार भी बढ़ा है। वहीं डिपो प्रभारी अशोक काला ने बताया कि काउंसलिंग के कारण यात्रियों की संख्या बढ़ने से डिपो की आय में वृद्धि हुई है। कांवड़ यात्रा के अंतिम चरण के बाद सभी मार्गों पर बस सेवाएं सामान्य होने की उम्मीद है जिससे यात्री संख्या और आय में और अधिक सुधार होगा।

सुरंग के बाहरी ढलान पर ट्रीटमेंट कार्य शुरू

रुद्रप्रयाग(आरएनएस)। जिला मुख्यालय में केदारनाथ हाईवे को बदरीनाथ हाईवे से जोड़ने वाली निर्माणाधीन सुरंग से सटे बाहरी ढलान पर 26 जुलाई को भूस्खलन हुआ था। अब एनएच की ओर से यहां ट्रीटमेंट कार्य शुरू कर दिया गया है।भूस्खलन के साथ आए मलबे की चपेट में आने से सुरंग के समीप भवन का जनरेटर कक्ष क्षतिग्रस्त हो गया था। डीएम जिलाधिकारी विशाल मिश्रा ने मौके का निरीक्षण कर ढलान की स्थिति का जायजा लिया था। इसके बाद प्रभावित हिस्से के उपचार के लिए तकनीकी स्तर पर कार्रवाई की गई। अब मौके पर ढलान को सुरक्षित करने के लिए ट्रीटमेंट कार्य कराया जा रहा है। एनएच खंड लोनिवि के अधिशासी अभियंता ओंकार पांडे ने बताया कि प्रभावित ढलान के ट्रीटमेंट का कार्य शुरू कर दिया गया है। बारिश के कारण जिस हिस्से में भूस्खलन हुआ था वहां आवश्यक सुरक्षा कार्य किए जा रहे हैं।

शिक्षा विभाग में लगातार दूसरे वर्ष सामान्य स्थानांतरण नहीं होने पर उठाए सवाल

अल्मोड़ा(आरएनएस)। शिक्षा विभाग में लगातार दूसरे वर्ष सामान्य स्थानांतरण नहीं होने पर एजुकेशनल मिनिस्ट्रीयल ऑफिसर्स एसोसिएशन कुमाऊं मंडल नैनीताल के पूर्व मंडलीय सचिव धीरेन्द्र कुमार पाठक ने सवाल उठाए हैं। उन्होंने मुख्यमंत्री से हस्तक्षेप कर शिक्षा विभाग के सामान्य कार्मिकों के भी स्थानांतरण कराने की मांग की है। प्रेस को जारी बयान में पाठक ने कहा कि शिक्षा विभाग के अधिकारियों की निर्णय लेने में असमर्थता के कारण वार्षिक स्थानांतरण लगातार दूसरे वर्ष भी प्रभावित हुए हैं। सरकार ने वर्ष 2017 में सभी विभागों के लिए वार्षिक स्थानांतरण नीति लागू की थी। इसके तहत अन्य विभागों में सुगम और दुर्गम के आधार पर स्थानांतरण हुए, लेकिन शिक्षा विभाग में सुगम-दुर्गम को लेकर उच्च न्यायालय में याचिका दायर होने के बाद प्रक्रिया अटक गई। उन्होंने कहा कि विभाग दो वर्ष में इस मामले का समाधान नहीं कर सका। न्यायालय ने अन्य आधार पर स्थानांतरण करने के निर्देश दिए, लेकिन उच्चाधिकारी उस आधार पर भी स्थानांतरण नहीं कर सके। वर्तमान में केवल पांच श्रेणियों में स्थानांतरण के प्रस्ताव मांगे गए हैं और सामान्य स्थानांतरण लगातार दूसरे वर्ष छोड़ दिए गए। पाठक ने कहा कि ऐसी स्थिति रही तो वर्ष 2027 में भी यही समस्या सामने आ सकती है। उन्होंने मुख्यमंत्री से मांग की कि शिक्षा विभाग के कार्मिकों के लिए सामान्य स्थानांतरण की व्यवस्था की जाए, ताकि लंबे समय से स्थानांतरण की प्रतीक्षा कर रहे कर्मचारियों को भी राहत मिल सके। साथ ही फारगो नियमावली से वंचित कार्मिकों को पदोन्नति का अवसर देने की मांग की, ताकि उनके साथ न्याय हो सके।

बारिश के बीच सड़कों की सतत निगरानी रखी जाये: जिलाधिकारी

हमारे संवाददाता

रुद्रप्रयाग। जनपद में रुक-रुक कर हो रही बारिश के चलते विभिन्न स्थानों पर सड़कों के बाधित होने की स्थिति को देखते हुए जिलाधिकारी विशाल मिश्रा ने सभी उपजिलाधिकारियों को अपने-अपने क्षेत्रों में सड़कों की नियमित निगरानी करने के निर्देश दिए हैं।

जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि सभी उपजिलाधिकारी प्रात: और सायं अपने-अपने क्षेत्रों की सड़कों की स्थिति का जायजा लें तथा मार्ग बाधित होने की सूचना मिलने पर रिस्पांस टाइम पर विशेष ध्यान देते हुए तत्काल कार्रवाई सुनिश्चित करें। जिलाधिकारी ने कहा कि मुख्यमंत्री के स्पष्ट निर्देश हैं कि किसी भी सड़क को अनावश्यक रूप से बंद न रहने दिया जाए। सड़क बंद होने की स्थिति में संबंधित विभागों के साथ समन्वय कर तत्काल मार्ग को सुचारू कराया जाए, ताकि आमजन एवं यात्रियों

बंद मार्गों को तत्काल खोलने पर जोर

को आवागमन में किसी प्रकार की परेशानी न हो। उन्होंने सभी उपजिलाधिकारियों को निर्देश दिए कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में प्रतिदिन सड़कों की स्थिति का अपडेट लेते रहें और जहां कहीं भी सड़क बाधित हो, वहां संबंधित विभाग की टीम को तत्काल मौके पर भेजकर मार्ग खोलने की कार्रवाई सुनिश्चित करें।

जिलाधिकारी ने कहा कि बारिश के दौरान सड़कों की सतत निगरानी, त्वरित रिस्पांस और समयबद्ध कार्रवाई प्रशासन की प्राथमिकता है। प्रशासन द्वारा जनपद के विभिन्न मार्गों पर लगातार नजर रखी जा रही है, ताकि बारिश के कारण उत्पन्न होने वाली किसी भी स्थिति से प्रभावी ढंग से निपटा जा सके।

नए भवन में शिफ्ट हुए रोडवेज डिपो के सभी कार्यालय

कोटद्वार(आरएनएस)। रोडवेज डिपो का पुराना भवन गिराना शुरू कर दिया गया। इससे पहले सभी कार्यालयों को खाली कर नए भवन में शिफ्ट किया गया है। वहीं, निर्माण स्थल पर लगाई गई बाड़ को हटाकर रोडवेज बसों को डिपो परिसर में खड़ा करने के प्रयास शुरू किए गए हैं।मंडी परिषद द्वारा विगत दो वर्षों से रोडवेज डिपो के नए भवन का निर्माण कराया जा रहा था। निर्माण कार्य पूरा होते ही पुराने भवन को खाली कर सभी कार्यालय नए भवन में शिफ्ट कर दिए गए हैं। लगातार दूसरे दिन कर्मचारियों ने नए भवन परिसर में ही कामकाज किया। वहीं, जर्जर हालत में खड़े पुराने भवन को तोड़ने का काम शुरू किया गया है। एआरएम कक्ष समेत ऊपरी मंजिल पर बने कार्यालयों की छतों को तोड़ा गया है।एआरएम अनुराग पुरोहित ने बताया कि पुराने जर्जर भवन को गिराने के बाद डिपो के नए भवन के बाहर गहरे हिस्से में भराव कराकर परिसर को समतल किया जाएगा। फिलहाल टिन की बाड़ को हटाकर एक-एक कर बसों को डिपो परिसर में खड़ा करने के प्रयास किए जा रहे हैं, ताकि सड़क पर जाम न लगे।

सुमन पार्क में शासन-प्रशासन की शुद्धि-बुद्धि के लिए किया हवन

नई टिहरी(आरएनएस)। टिहरी में प्रस्तावित मेडिकल कॉलेज निर्माण करने की मांग को लेकर श्रीदेव सुमन पार्क जन जागरण सत्याग्रह कर रहे लोगों ने शासन-प्रशासन की शुद्धि-बुद्धि के लिए हवन यज्ञ किया। दूसरी ओर, मेडिकल कॉलेज निर्माण संघर्ष समिति के लोगों ने बैठक कर 16 अगस्त से मांग के समर्थन में अनिश्चितकालीन धरना शुरू करने का निर्णय लिया।

मेडिकल कॉलेज निर्माण करने की मांग को लेकर जन जागरण सत्याग्रह पर बैठे पूर्व जिला पंचायत सदस्य जीतराम भट्ट ने कहा कि वह गत 9 दिनों से वह सत्याग्रह पर हैं, लेकिन शासन-प्रशासन की ओर से मेडिकल कॉलेज निर्माण की स्थिति को स्पष्ट नहीं किया जा रहा है। शासन-प्रशासन में बैठे लोगों को अच्छी बुद्धि आए इसके लिए हवन यज्ञ किया गया है।

उन्होंने कहा कि सरकार जल्द टिहरी के लोगों की भावना के अनुरूप मेडिकल कॉलेज के निर्माण की घोषणा करें। उधर दूसरी ओर मेडिकल कॉलेज निर्माण संघर्ष समिति के संयोजक डॉ राकेश भूषण गोदियाल और सह संयोजक भगवान सिंह रावत ने बताया बौराड़ी में संपन्न हुई बैठक में निर्णय लिया गया, कि 15 अगस्त तक मेडिकल कॉलेज के निर्माण की घोषणा नहीं होती है तो 16 अगस्त को नगर क्षेत्र में रैली निकालने के बाद बौराड़ी के गणेश चौक अनिश्चित कालीन धरना शुरू किया जाएगा।बताया जाखणीधार क्षेत्र में समिति की ओर से जन जागरूकता टीम भेजी गई है। वह क्षेत्र के लोगों से सहयोग की अपील करेगी। इस मौके पर विक्रम तोपवाल, युद्धवीर नेगी, सरस्वती चमोली, उर्मिला सुयाल, सुषमा भट्ट, आशा भट्ट, बिजलदास, मनोहर कुडियाल, टीकम चौहान, रविंद्र कुमार, जेएस नेगी, जितेंद्र सेमवाल, महिपाल नेगी, जयवीर रावत, अनुसूया नौटियाल, रमेश रतूड़ी,देवेंद्र नौडियाल, सीपी डबराल, कमल सिंह महर, आर्यन भट्ट,पर्वत कुमाईं, विशाल राणा, नंदू वाल्मीकि आदि मौजूद रहे।

उपपा ने सरकार पर राज्य के संसाधनों की लूट का लगाया आरोप

रुद्रपुर(आरएनएस)। उत्तराखंड परिवर्तन पार्टी (उपपा) ने नगर के मुख्य चौक पर जनसभा कर केंद्र और प्रदेश सरकार पर लोकतंत्र को कमजोर करने का आरोप लगाया। पार्टी नेताओं ने कहा कि शहीदों के सपनों को कुचलकर राज्य के प्राकृतिक और आर्थिक संसाधनों की खुली लूट की जा रही है। उपपा ने आगामी विधानसभा चुनाव में जनता को मजबूत राजनीतिक विकल्प देने का दावा किया। पत्रकारों से वार्ता में उपपा के राष्ट्रीय समन्वयक पीसी तिवारी और केंद्रीय अध्यक्ष प्रभात ध्यानी ने बताया कि न्यायपूर्ण समाज की स्थापना के लिए पार्टी प्रदेश के सभी विधानसभा क्षेत्रों में व्यापक जनसंवाद कार्यक्रम चला रही है।

उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, पलायन, खेती-किसानी और श्रमिकों के शोषण जैसे बुनियादी मुद्दों के बजाय नफरत की राजनीति के जरिए जनता का ध्यान भटका रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि शिक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्था निजी हाथों में सौंपी जा रही है। मुनाफे में चल रही सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी आईएमपीसीएल को निजी हाथों में सौंपे जाने का विरोध करते हुए इसे राज्य के हितों के साथ खिलवाड़ बताया। नेताओं ने कहा कि राज्य गठन के ढाई दशक बाद भी हिमालयी राज्य की मूल परिकल्पना साकार नहीं हो सकी है। पहाड़ से तराई तक युवा रोजगार की तलाश में पलायन को मजबूर हैं। उन्होंने कहा कि जनता लंबे समय से सख्त भू-कानून और 'नशा नहीं, रोजगार दो' की मांग कर रही है, लेकिन सरकार संसाधनों की बंदरबांट में लगी है। अंकिता भंडारी और केतन हत्याकांड का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि दोनों मामलों के असली सूत्रधार आज तक सामने नहीं आ सके हैं। क्षेत्रीय दलों पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि एक प्रमुख क्षेत्रीय दल के सत्ताधारी दल के आगे झुकने से जनता का विश्वास टूटा है। उपपा का लक्ष्य संघर्षशील और ईमानदार ताकतों को एक मंच पर लाकर प्रदेश को नया राजनीतिक विकल्प देना है। इस दौरान राष्ट्रीय महासचिव जीवन चंद्र उप्रेती, नरेश नौडियाल, किरन आर्या, लालमणि, ललिता रावत, दिनेश उपाध्याय, कौशल्या, आशिफ, गिरीश आर्य समेत कई कार्यकर्ता और पदाधिकारी मौजूद रहे।

सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग के विरोध में कांग्रेस ने फूंका भाजपा सरकार का पुतला

संवाददाता

देहरादून। भाजपा सरकार द्वारा सरकारी मशीनरी के कथित दुरुपयोग तथा कांग्रेस कार्यकर्ताओं के उत्पीड़न के विरोध में भाजपा सरकार का पुतला दहन किया गया। आज यहां उत्तराखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष गणेश गोदियाल के निर्देशानुसार महानगर कांग्रेस कमेटी, देहरादून द्वारा एस्लेहॉल चौक पर भाजपा सरकार द्वारा सरकारी मशीनरी के कथित दुरुपयोग तथा कांग्रेस कार्यकर्ताओं के उत्पीड़न के विरोध में भाजपा सरकार का पुतला दहन किया गया। इस अवसर पर महानगर कांग्रेस कमेटी, देहरादून के अध्यक्ष डॉ. जसविंदर सिंह गोगी ने कहा कि 8 अगस्त को हल्द्वानी में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की विशाल रैली में शामिल होने जा रहे कांग्रेस कार्यकर्ताओं को नैनीताल पुलिस प्रशासन द्वारा जगह-जगह रोककर परेशान किया गया। उन्होंने कहा कि यह लोकतांत्रिक व्यवस्था और नागरिकों के शांतिपूर्ण राजनीतिक कार्यक्रमों में भाग लेने के अधिकार पर गंभीर सवाल खड़े करता है। उन्होंने नैनीताल के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा कांग्रेस कार्यकर्ताओं के लिए "अराजक तत्व" जैसे शब्दों के प्रयोग पर भी कड़ी आपत्ति जताते हुए कहा कि कांग्रेस कार्यकर्ता लोकतांत्रिक तरीके से अपनी आवाज उठाते हैं और उन्हें इस प्रकार अपमानित करना दुर्भाग्यपूर्ण है। डॉ. जसविंदर सिंह गोगी ने कहा, "कांग्रेस पार्टी लोकतंत्र, संविधान और नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिए सदैव संघर्ष करती रही है। भाजपा सरकार चाहे जितना भी सरकारी तंत्र का दुरुपयोग कर ले, कांग्रेस कार्यकर्ताओं की आवाज को दबाया नहीं जा सकता। हम लोकतांत्रिक और शांतिपूर्ण तरीके से जनहित के मुद्दों को लगातार उठाते रहेंगे।" पुतला दहन कार्यक्रम में ब्लॉक अध्यक्ष राजेश पुंढ़ीर, ललित बद्री, अर्जुन पासी, राजीव प्रजापति, सरिता बिष्ट, संजय उनियाल, अभिनव थापर, वीरेंद्र पंवार, दीपक मधवाल अभिषेक तिवारी, सुनील जायसवाल, अनूप कपूर, अरुण शर्मा, अल्ताफ, संजय भारती, राम किशन यादव,विजेंद्र चौहान, सुनील सुनील बांगा, राहुल तलवार, सुनील, कुलदीप नरूला ,विशाल, सावित्री थापा, मंजू चौहान, मिथलेश, रंजना देवी आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

अब कांग्रेस करेगी 'इंटरनल सर्वे'...

◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

पक्ष में वोट में बदलने की है। इसके लिए पार्टी को मजबूत उम्मीदवारों की जरूरत होगी। केवल सरकार विरोधी माहौल के भरोसे चुनाव जीतना आसान नहीं होगा। हर सीट पर ऐसा चेहरा उतारना होगा जो स्थानीय स्तर पर भाजपा को सीधी चुनौती दे सके। इंटरनल सर्वे इसी रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकता है। कांग्रेस की रणनीति में अब संगठन और प्रत्याशी चयन दोनों को समान महत्व देने की कोशिश दिखाई दे रही है। पार्टी नेतृत्व जानता है कि चुनावी मैदान में केवल प्रदेश स्तर के मुद्दे पर्याप्त नहीं होंगे।

प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में स्थानीय नेतृत्व की ताकत और संगठन की सक्रियता निर्णायक भूमिका निभाएगी। इसीलिए संभावित प्रत्याशियों की स्थिति का पहले से आकलन कर पार्टी चुनाव के अंतिम चरण में किसी तरह के प्रयोग या जल्दबाजी से बचना चाहती है। कांग्रेस का इंटरनल सर्वे पार्टी के भीतर केवल आंकड़े जुटाने की कवायद नहीं होगा। यह आने वाले विधानसभा चुनाव में टिकट वितरण और चुनावी रणनीति की दिशा तय करने वाला महत्वपूर्ण आधार बन सकता है। अब देखना यह होगा कि सर्वे के बाद पार्टी कितने मौजूदा विधायकों पर भरोसा कायम रखती है और कितनी सीटों पर नए चेहरों को मौका देने की रणनीति अपनाती है। फिलहाल कांग्रेस के भीतर टिकट के दावेदार सक्रिय हैं और संगठन चुनावी तैयारी में जुट चुका है। चुनावी रण अभी दूर है, लेकिन कांग्रेस ने संकेत दे दिया है कि इस बार टिकट की दौड़ में सिर्फ दावेदारी नहीं चलेगीकृदावेदार की जमीन भी नापी जाएगी।

राहुल गांधी पर भाजपा का 'हमला'..

◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

संसद की कार्यवाही से निकलकर व्यापक राजनीतिक बहस का हिस्सा बनता जा रहा है। इस राजनीतिक टकराव के बीच सबसे महत्वपूर्ण पक्ष छात्र हैं। जिस युवा ने किसी प्रतियोगी परीक्षा के लिए महीनों या वर्षों तैयारी की है, उसके लिए यह बहस केवल राजनीतिक मुद्दा नहीं है। उसके लिए परीक्षा व्यवस्था उसके भविष्य का सवाल है। वह चाहता है कि परीक्षा निष्पक्ष हो, भर्ती प्रक्रिया पारदर्शी हो और किसी भी तरह की अनियमितता पर तत्काल कार्रवाई हो। यही कारण है कि सत्ता और विपक्ष दोनों के सामने चुनौती है कि वे छात्रों के मुद्दे को राजनीतिक आरोपों तक सीमित न रखें। भाजपा का हमला राहुल गांधी पर है और विपक्ष सरकार को घेर रहा है। लेकिन छात्रों की निगाहें इस बात पर हैं कि संसद से उनके लिए क्या निकलेगा। सवाल अब यह नहीं कि किसने किसे घेरा। सवाल यह है कि छात्रों की समस्या का समाधान कौन करेगा। संसद में आरोपों का शोर कुछ समय के लिए राजनीतिक सुर्खियां जरूर बना सकता है, लेकिन छात्रों का भविष्य सुर्खियों से नहीं, ठोस फैसलों से बदलेगा। यही इस पूरे विवाद की असली कसौटी है।

80वें स्वतंत्रता दिवस की तैयारियों में जुटा देहरादून प्रशासन

परेड ग्राउंड में तैयारियां अंतिम चरण में, डीएम और एसएसपी ने लिया जायजा

संवाददाता

देहरादून। 80वें स्वतंत्रता दिवस कीं जिला प्रशासन अलर्ट मोड पर परेड ग्राउंड में डीएम व एसएसपी ने अंतिम चरण की तैयारियों का जायजा लिया।

आज यहां राजधानी देहरादून स्थित परेड ग्राउंड में राज्य स्तरीय 80वें स्वतंत्रता दिवस समारोह की तैयारियां अंतिम चरण में हैं। 15 अगस्त को सुबह 10 बजे मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी मुख्य मंच पर ध्वजारोहण करेंगे। समारोह को भव्य, अनुशासित और सुरक्षित बनाने के लिए प्रशासन और पुलिस विभाग मुस्तैद हैं। जिलाधिकारी डॉ. आशीष चौहान और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रमेन्द्र डोभाल ने कार्यक्रम स्थल का स्थलीय निरीक्षण कर व्यवस्थाओं की समीक्षा की। जिलाधिकारी ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथियों, महानुभावों एवं गणमान्य व्यक्तियों के लिए बैठक व्यवस्था, वाहन पार्किंग, सुरक्षा, यातायात संचालन, विद्युत आपूर्ति, स्वागत-सत्कार, स्वच्छता एवं पेयजल समेत सभी आवश्यक व्यवस्थाओं को पुख्ता करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी नोडल अधिकारी माइक्रो प्लानिंग के तहत आपसी समन्वय से कार्य करें और यह सुनिश्चित करें कि समारोह से जुड़ी कोई भी व्यवस्था अधूरी न रहे। इस दौरान उन्होंने मुख्य मंच, सेफ हाउस, फोटो गैलरी, साउंड सिस्टम तथा समारोह के लाइव प्रसारण के लिए एलईडी स्क्रीन की व्यवस्थाओं का भी निरीक्षण किया। स्वतंत्रता दिवस के मुख्य समारोह में पुलिस, अर्धसैनिक बल, होमगार्ड, एनसीसी और प्रांतीय रक्षक दल की टुकड़ियाँ पुलिस बैंड की धुन पर राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देंगी। इस अवसर पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, राज्य आंदोलनकारियों, उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों और सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस व विभागीय अधिकारियों को सम्मानित करेंगे। जिलाधिकारी ने पुलिस परेड एवं सलामी कार्यक्रम की तैयारियों की जानकारी लेते हुए निर्धारित समय-सारिणी के अनुसार कार्यक्रम को व्यवस्थित एवं गरिमापूर्ण ढंग से संचालित करने के निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि स्वतंत्रता दिवस समारोह की तैयारियों में किसी भी स्तर पर लापरवाही न बरती जाए। 15 अगस्त से पूर्व, 14 अगस्त को 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' का आयोजन किया जाएगा। इसमें वर्ष 1947 के विभाजन पीड़ितों को आमंत्रित कर सम्मानित किया जाएगा। दून लाइब्रेरी में सामाजिक सौहार्द और एकता का संदेश देने के लिए एक विशेष भव्य प्रदर्शनी का आयोजन होगा। नगर निगम परिसर में शाम को एक विशेष कवि सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। जिलाधिकारी ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस की तैयारियों को भी अंतिम रूप देने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान मुख्य विकास अधिकारी अभिनव शाह, अपर जिलाधिकारी (एफआर) केके मिश्रा, अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) स्मृता परमार, संयुक्त मजिस्ट्रेट राहुल आनंद, सिटी मजिस्ट्रेट राकेश चंद्र तिवारी, एसडीएम सदर अपूर्वा सिंह, एसडीएम कुमकुम जोशी, एसडीएम विनोद कुमार, पीडी विक्रम सिंह सहित लोक निर्माण विभाग, एमडीडीए, पर्यटन, उद्यान, पूर्ति एवं अन्य संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग कर रही है भाजपा सरकारः लालचंद

हमारे संवाददाता

देहरादून। कांग्रेस प्रदेश उपाध्यक्ष लालचंद शर्मा ने नैनीताल पुलिस द्वारा कांग्रेस कार्यकर्ताओं को कथित तौर पर "अराजक तत्व" कहे जाने पर कड़ी आपत्ति जताते हुए इसे भाजपा सरकार की दमनकारी और राजनीतिक प्रतिशोध की मानसिकता का उदाहरण बताया।

उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में सरकार और पुलिस प्रशासन की जिम्मेदारी नागरिकों की आवाज सुनना और कानून-व्यवस्था बनाए रखना है, न कि शांतिपूर्ण तरीके से अपनी बात रखने वाले राजनीतिक कार्यकर्ताओं को अपमानित या बदनाम करना। कांग्रेस कार्यकर्ताओं को "अराजक तत्व" कहना न केवल आपत्तिजनक है, बल्कि पुलिस की निष्पक्षता पर भी गंभीर सवाल खड़े करता है। लालचंद शर्मा ने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार अपने राजनीतिक हितों के लिए सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग कर रही है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस कार्यकर्ता जनहित के मुद्दों को उठाते रहेंगे और सरकार की गलत नीतियों के खिलाफ लोकतांत्रिक तरीके से संघर्ष जारी रखेंगे।

उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार को यह समझना चाहिए कि सरकारी मशीनरी किसी राजनीतिक दल की निजी संपत्ति नहीं है। अधिकारियों और पुलिसकर्मियों को संविधान और कानून के अनुसार निष्पक्ष होकर कार्य करना चाहिए। राजनीतिक दबाव में विपक्षी कार्यकर्ताओं के खिलाफ कार्रवाई करना लोकतंत्र को कमजोर करने वाला कदम है। कांग्रेस प्रदेश उपाध्यक्ष ने पुलिस अधिकारियों से मांग की कि नैनीताल में कांग्रेस कार्यकर्ताओं को "अराजक तत्व" कहे जाने की घटना का संज्ञान लिया जाए और यह स्पष्ट किया जाए कि किस आधार पर लोकतांत्रिक गतिविधियों में शामिल कार्यकर्ताओं के लिए इस तरह की भाषा का प्रयोग किया गया।

स्वतंत्रता दिवस पर बंद रहेंगी, सभी मदिरा की दुकानें

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। जिलाधिकारी मयूर दीक्षित ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जनपद हरिद्वार में संचालित सभी मदिरा दुकानों एवं संबंधित लाइसेंसी प्रतिष्ठानों को बंद रखने के आदेश जारी किए हैं।

जिलाधिकारी द्वारा जारी आदेश में आबकारी अनुज्ञापनों हेतु सामान्य शर्तों के नियम 13(बी) 2 के प्रावधानों के अनुसार 15 अगस्त 2026 को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जनपद हरिद्वार में स्थित समस्त विदेशी/देशी मदिरा की दुकाने, डिपार्टमेंटल स्टोर, (एफ.एल.-5डी. एस), गोदाम (एफ.एल-2/ सी. एल-2),बार, (एफ.एल-6/7),एक दिवसीय बार अनुज्ञापन, (एफ.एल-11), (एफ.एल.एम-3) (बॉटलिंग प्लांट), एन. डी.एल.डी. एफ एल- 39/40/41/43 एम. ए.-4, स्प्रिट के थोक व फुटकर बिक्री अनुज्ञापन (एफ एल - 16 व एफ एल -17) भाग अनुज्ञापन (आई डी -15/16), सैन्य कैंटीनों (एफ एल -9 /9ए) डिनेचर्ड स्प्रिट, स्पेशल डिनेचर्ड स्प्रिट, आसवनी, बुव्रारी इत्यादि समस्त आबकारी अनुज्ञापन/समस्त अनुज्ञापन जिसमें स्प्रिट अथवा मादक पदार्थ का उपयोग होता हो को मदिरा की बिक्री परिवहन एवं उपभोग हेतु पूर्ण रूप से बंद किया जाता है।

आदेश में यह भी स्पष्ट किया गया है कि स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जनपद हरिद्वार में संचालित सभी अनुज्ञापनों को बंदी दिवस के लिए वित्तीय वर्ष 2026-27 हेतु निर्धारित/व्यवस्थित राजस्व में किसी भी प्रकार की क्षतिपूर्ति/छूट देय नहीं होगी। जिलाधिकारी ने नगर मजिस्ट्रेट/उपजिलाधिकारी तथा जिला आबकारी अधिकारी को आदेश का अनुपालन सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए हैं। साथ ही आबकारी निरीक्षकों को अपने-अपने क्षेत्रों में आदेश का कड़ाई से पालन सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए गए हैं।

मुख्यमंत्री ने की जल जीवन मिशन की प्रगति की समीक्षा

शेष कार्यों को निर्धारित समयसीमा में पूरा करेःधामी

हमारे संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने आज सचिवालय में जल जीवन मिशन की प्रगति, वित्तीय स्थिति, योजनाओं के संचालन एवं रख-रखाव तथा आगामी कार्ययोजना की समीक्षा की। बैठक में जलापूर्ति योजनाओं की प्रगति, ग्रामीण परिवारों तक नल से जल की पहुंच एवं सत्यापन, जल गुणवत्ता, वित्तीय प्रबंधन तथा योजनाओं के नियमित संचालन से संबंधित विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई।

मुख्यमंत्री ने हर घर जल का लक्ष्य शत-प्रतिशत पूरा करने तथा शेष पात्र ग्रामीण परिवारों को निर्धारित समयसीमा में नल कनेक्शन से जोड़ने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जल जीवन मिशन की सफलता केवल नल कनेक्शन की संख्या से नहीं, बल्कि प्रत्येक घर तक नियमित, पर्याप्त, सुरक्षित एवं गुणवत्तापूर्ण पेयजल पहुंचने से तय होगी। पूर्ण हो चुकी योजनाओं का स्थलीय सत्यापन भी कराया जाए। मुख्यमंत्री ने निर्माणाधीन एवं लंबित पेयजल योजनाओं को मिशन मोड में निर्धारित समयसीमा के भीतर पूरा करने तथा जिलाधिकारियों को संबंधित विभागों के साथ समन्वय कर शीघ्र समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि प्रत्येक योजना की भौतिक एवं वित्तीय प्रगति की नियमित समीक्षा की जाए। मुख्यमंत्री ने पर्वतीय क्षेत्रों में पेयजल स्रोतों के संरक्षण एवं पुनर्जीवीकरण, वर्षा जल संचयन तथा जल स्रोतों के पुनर्भरण पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए। प्रत्येक जनपद में जलापूर्ति संबंधी तकनीकी समस्याओं के त्वरित समाधान की व्यवस्था विकसित करने तथा योजनाओं के संचालन एवं रख-रखाव की स्थायी व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। मुख्यमंत्री ने जनपदवार लक्ष्य, समयसीमा और जवाबदेही तय करने तथा अनावश्यक विलंब पाए जाने पर संबंधित कार्यदायी संस्था एवं जिम्मेदार अधिकारियों की जवाबदेही तय करने के भी निर्देश दिये।

बैठक में बताया गया कि राज्य में जल जीवन मिशन के अंतर्गत 16,555 योजनाओं में से 15,540 योजनाएं पूरी हो चुकी हैं। राज्य की औसत प्रगति 92.46 प्रतिशत है तथा 1,015 योजनाएं प्रगति पर हैं। ग्रामीण परिवारों तक नल से जल की पहुंच की समीक्षा के दौरान बताया गया कि 14.48 लाख में से 14.20 लाख परिवारों को कनेक्शन दिये जा चुके हैं। बैठक में जानकारी दी गई कि 14,979 गांवों में से 9,796 गांव में हर नल से जल का सत्यापन हो चुका है। बैठक में अवस्थापना अनुश्रवण परिषद के उपाध्यक्ष विश्वास डाबर, प्रमुख सचिव आर.के.सुधांशु, सचिव पेयजल रणवीर सिंह चौहान, अपर सचिव रोहित मीणा, सुश्री झरना कमठान एवं संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

पीडिता की फरियाद सुनने के लिए एसएसपी पहुंचे ग्राउंड फ्लोर पर

संवाददाता

देहरादून। व्हील चेयर पर बैठकर एसएसपी कार्यालय पहुंची महिला की फरियाद सुनने एसएसपी प्रमेन्द्र डोबाल स्वंय ग्राउंड फ्लोर पर पहुंचे और महिला की पीडा सुनकर अधिकारियों को निर्देश देने के साथ ही सीओ डालनवाला को जांच सौंपी।

आज यहां एसएसपी दफ्तर पहुंची महिला सीढ़िया चढ़ने में असमर्थ थी जैसे ही देहरादून एसएसपी प्रेमन्द्र डोबाल को पता चला वो खुद ग्राउंड फ्लोर पर पहुंचे और व्हील चेयर पर आई महिला की फरियाद सुन संबंधित अधिकारी को समस्या के समाधान के निर्देश दिए। सीओ डालनवाला को निर्देश दिए है कि मामलें की जांच कर पीड़ित को न्याय दिलाया जाए। अपनी फरियाद लेकर एसएसपी कार्यालय पहुंची एक महिला सीढ़ियां चढ़ने में असमर्थ थी। महिला के व्हील चेयर पर होने की जानकारी जैसे ही देहरादून के एसएसपी प्रेमेन्द्र डोबाल को मिली, वह खुद ग्राउंड फ्लोर पर पहुंचे और महिला की समस्या सुनी। एसएसपी ने महिला की पूरी शिकायत सुनने के बाद संबंधित अधिकारियों को मामले में तत्काल कार्रवाई के निर्देश दिए। उन्होंने सीओ को प्रकरण की निष्पक्ष जांच कर नियमानुसार आवश्यक कार्रवाई करने को कहा। एसएसपी के निर्देश पर सीओ डालनवाला भी तत्काल मौके पर पहुंचे और महिला की शिकायत को विस्तार से सुना। इसके बाद मामले की जांच शुरू कर दी गई है। एसएसपी द्वारा फरियादी की शारीरिक स्थिति को देखते हुए स्वयं ग्राउंड फ्लोर पर पहुंचकर उसकी समस्या सुनने की पहल की स्थानीय लोगों के बीच चर्चा का विषय बनी हुई है। व्हील चेयर पर पहुंची महिला की एसएसपी ने ग्राउंड फ्लोर पर सुनी फरियाद,निष्पक्ष जांच के निर्देश दिये।

आसमान में फेल हुआ इंडिगो विमान का एक इंजन, इमरजेंसी लैंडिंग

संवाददाता

नई दिल्ली। कोलकाता से चेन्नई जा रही इंडिगो की उड़ान संख्या 6इ-723 में हवा में ही एक बड़ा तकनीकी संकट खड़ा हो गया। उड़ान के दौरान विमान का बायां इंजन अचानक निष्क्रिय हो गया। इसके बाद चेन्नई एयरपोर्ट पर आनन-फानन में रात 11:29 बजे फुल इमरजेंसी घोषित कर दी गई।

इमरजेंसी घोषित होते ही चेन्नई एयरपोर्ट अथॉरिटी और आपातकालीन प्रतिक्रिया टीमों ने रनवे पर फायर ब्रिगेड और मेडिकल एंबुलेंस की तैनाती कर दी। विमान का निर्धारित समय रात 11:30 बजे था। आपात स्थिति के बावजूद कुशल पायलटों ने रात 11:37 बजे विमान को चेन्नई हवाई अड्डे के रनवे 25 पर सुरक्षित उतार लिया। विमान में कुल 224 लोग सवार थे। सभी यात्रियों और चालक दल के सदस्यों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। विमान की सुरक्षित लैंडिंग और शुरुआती तकनीकी निरीक्षण के बाद रात 11:47 बजे फुल इमरजेंसी को आधिकारिक रूप से वापस ले लिया गया।

अंतर्राज्जीय लुटेरा गिरफ्तार, एक लाख की अंगूठी बरामद

हमारे संवाददाता

नैनीताल। लूट की घटना का खुलासा करते हुए पुलिस ने एक अंतराज्जीय लुटेरे को गिरफ्तार कर लिया गया है। जिसके कब्जे से लूटी गयी एक लाख रूपये की अंगूठी बरामद की गयी है।

जानकारी के अनुसार बीते सोमवार को महेंद्र चंद तिवारी पुत्र स्वर्गीय कृष्ण तिवारी निवासी मकान नंबर 55 भूमिया बिहार, कुसुमखेड़ा मुखानी हल्द्वानी द्वारा थाना मुखानी में तहरीर देकर बताया गया था कि बीती 8 अगस्त को अज्ञात व्यक्ति द्वारा जबरन उनके हाथ से 6-7 ग्राम सोने की अंगूठी छीनी गयी है। मामले में पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी गयी। जांच के दौरान पुलिस द्वारा जब सीसी कैमरो का अवलोकन किया गया तो 1 संदिग्ध व्यक्ति दिखाई दिया, जिसकी तलाश शुरू कर दी गयी। जिसे पुलिस ने बीती रात एक सूचना के आधार पर बिना नंबर की स्कूटी के साथ थाना मुखानी क्षेत्र से मय झपटमारी की गयी अंगुठी के साथ गिरफ्तार किया गया। पूछताछ में गिरफ्तार व्यक्ति ने अपना नाम विनोद शर्मा पुत्र स्वर्गीय संपूर्णानंद शर्मा निवासी मोहल्ला गोजानी, कोतवाली रामनगर, जिला नैनीताल बताया। पुलिस के अनुसार आरोपी शातिर किस्म का अपराधी है जिसके खिलाफ उत्तराखण्ड एवं उत्तर प्रदेश में लूट, धोखाधड़ी झपटमारी, के कई मुकदमे दर्ज है। बहरहाल पुलिस ने उसे न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया है। बरामद की गयी अंगूठी लगभग एक लाख रूपये की बतायी जा रही है।

कांवड़ मेला समाप्ति के बाद गंगोत्री धाम में चलाया संयुक्त स्वच्छता अभियान

संवाददाता

उत्तरकाशी। कांवड़ मेला सकुशल सम्पन्न होने के उपरान्त गंगा सभा के तत्वावधान में श्री गंगोत्री धाम में विशेष स्वच्छता अभियान आयोजित किया गया।

आज यहां कांवड़ मेला सकुशल सम्पन्न होने के उपरान्त गंगा सभा के तत्वावधान में श्री गंगोत्री धाम में विशेष स्वच्छता अभियान आयोजित किया गया। अभियान में गंगा सभा के सदस्यों के साथ उत्तरकाशी पुलिस, एसडीआरएफ , वन विभाग, नगर पंचायत एवं स्थानीय लोगों ने संयुक्त रूप से प्रतिभाग कर श्री गंगोत्री धाम के स्नान घाटों, भागीरथी नदी तटों, धाम क्षेत्र एवं मंदिर परिसर में

व्यापक साफ-सफाई की गई। इस दौरान घाटों एवं नदी तटों पर पड़े कूड़े-कचरे, प्लास्टिक एवं अन्य अपशिष्ट पदार्थों के साथ ही भागीरथी नदी में प्रवाहित किए गए वस्त्र एवं अन्य सामग्री को एकत्र कर विधिवत निस्तारित किया गया। कांवड़ मेले के दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के आगमन के बाद धाम की स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए आयोजित इस संयुक्त अभियान का उद्देश्य श्री गंगोत्री धाम की पवित्रता एवं स्वच्छता बनाए रखने के साथ-साथ मां गंगा की निर्मलता, अविरलता एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाना रहा। उत्तरकाशी पुलिस सभी श्रद्धालुओं एवं आमजन से अपील करती है कि श्री गंगोत्री धाम एवं मां गंगा की पवित्रता और निर्मलता बनाए रखना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। गंगा तटों पर कूड़ा-कचरा न डालें, प्लास्टिक एवं अन्य अपशिष्ट पदार्थों का प्रयोग एवं त्याग न करें तथा पूजा सामग्री, वस्त्र एवं अन्य सामग्री नदी में प्रवाहित करने के बजाय निर्धारित स्थान पर ही रखें। पावन स्थलों स्वच्छता एवं पवित्रता बनाए रखने में सहभागी बनें।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकार:
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*

कार्यालय: दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोट: सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।